पाठ-सूची

आमुख	*v*
शिक्षको से	*viii*

1.वह चिड़िया जो (कविता)	**केदारनाथ अग्रवाल**
2.बचपन (सस्मरण)	**कृष्णा सोबती**
3.नादान दोस्त (कहानी)	**प्रेमचंद**
4.चाँद से थोड़ी-सी गप्पे (कविता)	**शमशेर बहादुर सिंह**
5.अक्षरो का महत्व (निबध)	**गुणाकर मुले**
6.पार नज़र के (कहानी)	**जयंत विष्णु नार्लीकर**
7.साथी हाथ बढ़ाना (गीत)	**साहिर लुधियानवी**
8.ऐसे-ऐसे (एकाकी)	**विष्णु प्रभाकर**
9.टिकट-अलबम (कहानी)	**सुंदरा रामस्वामी**
10.झाँसी की रानी (कविता)	**सुभद्रा कुमारी चौहान**
11.जो देखकर भी नही देखते (निबध)	**हेलेन केलर**
12.ससार एक पुस्तक है (पत्र)	**जवाहरलाल नेहरू**
13.मै सबसे छोटी होऊँ (कविता)	**सुमित्रानंदन पंत**
14.लोकगीत (निबध)	**भगवतशरण उपाध्याय**
15.नौकर (निबध)	**अनु बंद्योपाध्याय**
16.वन के मार्ग मे (कविता)	**तुलसीदास**
17.पेपरमेशी (अतिरिक्त पठन हेतु)	**जया विवेक**
18.साँस-साँस मे बाँस (अतिरिक्त पठन हेतु)	**एलेक्स एम. जॉर्ज**
19.मत बाँटो इसान को (अतिरिक्त पठन हेतु)	**विनय महाजन**

1. वह चिड़िया जो

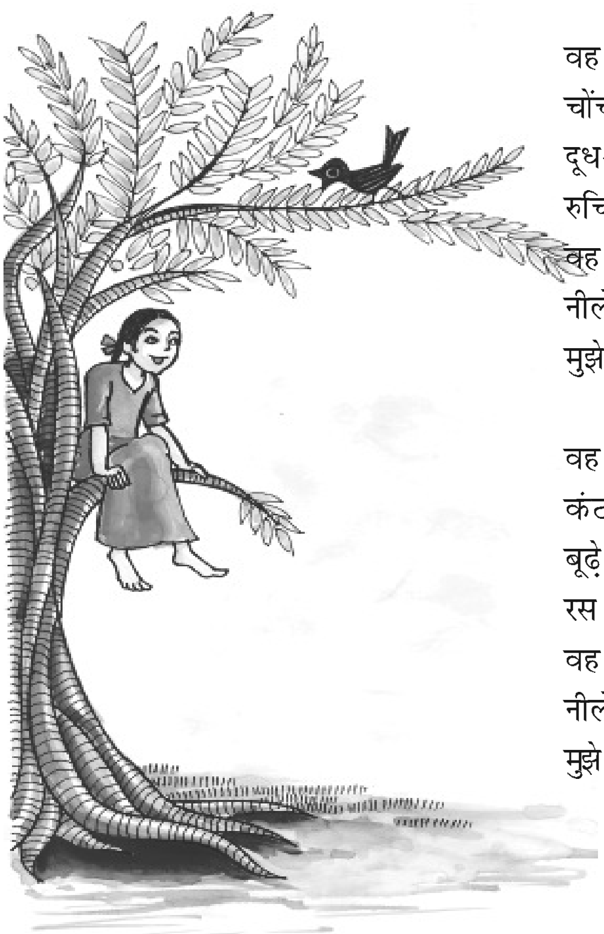

वह चिड़िया जो-
चोंच मार कर
दूध-भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो-
कंठ खोल कर
बूढ़े वन-बाबा की खातिर
रस उँडेल कर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो-
चोंच मार कर
चढ़ी नदी का दिल टटोल कर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखों वाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

❑ ***केदारनाथ अग्रवाल***

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कविता पढ़कर तुम्हारे मन में चिड़िया का जो चित्र उभरता है उस चित्र को कागज़ पर बनाओ।
2. तुम्हें कविता को कोई और शीर्षक देना हो तो क्या शीर्षक देना चाहोगे? उपयुक्त शीर्षक सोच कर लिखो।
3. इस कविता के आधार पर बताओ कि चिड़िया को किन-किन चीज़ों से प्यार है?
4. कवि ने चिड़िया को छोटी, संतोषी, मुँह बोली और गरबीली चिड़िया क्यों कहा है?
5. आशय स्पष्ट करो–
   (क) रस उँडेल कर गा लेती है
   (ख) चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
   जल का मोती ले जाती है

अनुमान और कल्पना

1. कवि ने नीली चिड़िया का नाम नहीं बताया है। वह कौन-सी चिड़िया रही होगी? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए भारत की चिड़ियों के बारे में सबसे अधिक जानकारी रखने वाले पक्षी-विज्ञानी सालिम अली की पुस्तक 'भारतीय पक्षी' देखो। उसमें ऐसे सभी पक्षियों का विस्तार से वर्णन है जो हमारे देश में पाए जाते हैं। इनमें ऐसे पक्षी भी शामिल हैं जो जाड़े में एशिया के उत्तरी भाग और अन्य ठंडे देशों से भारत आते हैं। सालिम अली की पुस्तक देखकर तुम अनुमान लगा सकते हो कि इस कविता में वर्णित नीली चिड़िया शायद इनमें से कोई एक रही होगी : नीलकंठ
   छोटा किलकिला
   कबूतर
   बड़ा पतरिंगा
2. नीचे पक्षियों के कुछ नाम दिए गए हैं। उनमें यदि कोई पक्षी एक से अधिक रंग का है तो लिखो कि उसके किस हिस्से का रंग कैसा है ? जैसे तोते की चोंच लाल है, शरीर हरा है।
   मैना कौआ बतख कबूतर
3. कविता का हर बंध 'वह चिड़िया जो' से शुरू होता है और 'मुझे... बहुत प्यार है' पर खत्म होता है। तुम भी दी गईं इन पंक्तियों का अपनी कल्पना से प्रयोग करते हुए कविता में कुछ नए बंध जोड़ो।

भाषा की बात

1. पंखों वाली चिड़िया — ऊपर वाली दराज़
   नीले पंखों वाली चिड़िया — सबसे ऊपर वाली दराज़
   यहाँ रेखांकित शब्द विशेषण का काम कर रहे हैं। अगले पृष्ठ पर 'वाला/वाली' जोड़कर बनने वाले कुछ और विशेषण दिए गए हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों

की तरह इनके आगे एक-एक विशेषण और जोड़ो–

.... मोरों वाला बाग

.... पेड़ों वाला घर

.... फूलों वाली क्यारी

.... खादी वाला कुर्ता

.... रोने वाला बच्चा

.... मूँछों वाला आदमी

2. वह चिड़िया.........जुंडी के दाने **रुचि से**.........खा लेती है।
   वह चिड़िया.........**रस उँडेल कर** गा लेती है।
   कविता की इन पंक्तियों में मोटे छापे वाले शब्दों को ध्यान से पढ़ो। पहले वाक्य में 'रुचि से' खाने के ढंग की और दूसरे वाक्य में 'रस उँडेल कर' गाने के ढंग की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये दोनों क्रिया-विशेषण हैं। नीचे दिए वाक्यों में कार्य के ढंग या रीति से संबंधित क्रिया-विशेषण छाँटो–
   (क) सोनाली जल्दी-जल्दी मुँह में लड्डू ठूँसने लगी।
   (ख) गेंद लुढ़कती हुई झाड़ियों में चली गई।
   (ग) भूकंप के बाद मुज़फ़्फ़राबाद की ज़िंदगी धीरे-धीरे सामान्य होने लगी।
   (घ) कोई सफ़ेद-सी चीज़ धप्प से आँगन में गिरी।
   (ङ) इबोबी फुर्ती से चोर पर झपटा।
   (च) तेजिंदर सहमकर कोने में बैठ गया।
   (छ) यह पत्र मिलते ही फ़ौरन घर चली आओ।
   (ज) आज अचानक ठंड बढ़ गई है।

ध्यान देने योग्य शब्द

रुचि	-	इच्छा, पसंद
विजन	-	जंगल
गरबीली	-	गर्व करने वाली

2. बचपन

मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी।

मैं तुमसे कुछ इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, तुम्हारी नानी भी। बड़ी बुआ भी–बड़ी मौसी भी। परिवार में मुझे सभी लोग जीजी कहकर ही पुकारते हैं।

हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा-बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी। मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग-बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चॉकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफ़ेद पहनो। गहरे नहीं, हलके रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाकें पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते।

बचपन के कुछ फ्रॉक तो मुझे अब तक याद हैं।

हलकी नीली और पीली धारीवाला फ्रॉक। गोल कॉलर और बाजू पर भी गोल कफ़।

एक हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटोंवाला घेरदार फ्रॉक। नीचे गुलाबी रंग की फ्रिल।

उन दिनों फ्रॉक के ऊपर की जेब में रूमाल और बालों में इतराते रंग-बिरंगे रिबन का चलन था।

लैमन कलर का बड़े प्लेटोंवाला गर्म फ्रॉक जिसके नीचे फ़र टँकी थी।

दो ट्यूनिक भी याद हैं। एक चॉकलेट रंग का और अंदर की कोटी प्याज़ी। दूसरा ग्रे और उसके साथ सफ़ेद कोटी।

मुझे अपने मोज़े और स्टॉकिंग भी याद हैं!

बचपन में हमें अपने मोज़े खुद धोने पड़ते थे। वह नौकर या नौकरानी को नहीं दिए जा सकते थे। इसकी सख्त मनाही थी।

हम बच्चे इतवार की सुबह इसी में लगाते। धो लेने के बाद अपने-अपने जूते पॉलिश करके चमकाते। जब जूते कपड़े या ब्रश से रगड़ते तो पॉलिश की चमक उभरने लगती।

सरवर, मुझे आज भी बूट पॉलिश करना अच्छा लगता है। हालाँकि अब नई-नई किस्म के शू आ चुके हैं। कहना होगा कि ये पहले से कहीं ज़्यादा आरामदेह हैं। हमें जब नए जूते मिलते, उसके साथ ही छालों का इलाज शुरू हो जाता।

जब कभी लंबी सैर पर निकलते, अपने पास रुई ज़रूर रखते। जूता लगा तो रुई मोज़े के अंदर। हाँ, हमारे-तुम्हारे बचपन में तो बहुत फ़र्क हो चुका है।

हर शनीचर को हमें ऑलिव ऑयल या कैस्टर ऑयल पीना पड़ता। यह एक मुश्किल काम था। शनीचर को सुबह से ही नाक में इसकी गंध आने लगती!

छोटे शीशे के गिलास जिन पर ठीक खुराक के लिए निशान पड़े रहते, उन्हें देखते ही मितली होने लगती।

मुझे आज भी लगता है कि अगर हम न भी पीते वह शनिवारी दवा तो कुछ ज़्यादा बिगड़ने वाला नहीं था। सेहत ठीक ही रहती।

तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है। यहाँ तक कि बचपन की दिलचस्पियाँ भी बदल गई हैं।

याद रहे, उन दिनों कुछ घरों में ग्रामोफ़ोन थे, रेडियो और टेलीविजन नहीं थे।

हमारे बचपन की कुलफ़ी आइसक्रीम हो गई है। कचौड़ी–समोसा पैटीज़ में बदल गया है। शहतूत और फ़ाल्से और खसखस के शरबत कोक-पेप्सी में।

उन दिनों कोक नहीं, लैम्नेड, विमटो मिलती थी।

शिमला और नई दिल्ली में बड़े हुए बच्चों को वैंगर्स और डेविको रेस्तराँ की चॉकलेट और पेस्ट्री मज़ा देनेवाली होती। हम भाई–बहनों की ड्यूटी लगती शिमला माल से ब्राउन ब्रैड लाने की।

हमारा घर माल से ज़्यादा दूर नहीं था। एक छोटी–सी चढ़ाई और गिरजा मैदान पहुँच जाते। वहाँ से एक उतराई उतरते और माल पर। कन्फ़ैक्शनरी काउंटर पर तरह–तरह की पेस्ट्री और चॉकलेट की खुशबू मनभावनी!

हमें हफ़्ते में एक बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी। सबसे ज़्यादा मेरे पास ही चॉकलेट-टॉफ़ी का स्टॉक रहता। मैं चॉकलेट लेकर खड़े-खड़े कभी न खाती। घर लौटकर साइडबोर्ड पर रख देती और रात के खाने के बाद बिस्तर में लेटकर मज़े ले-ले खाती।

शिमला के काफ़ल भी बहुत याद आते हैं। खट्टे-मीठे। कुछ एकदम लाल, कुछ गुलाबी। रसभरी। कसमल। सोचकर ही मुँह में पानी भर आए। चैस्टनट एक और गज़ब की चीज़। आग पर भूने जाते और फिर छिलके उतारकर मुँह में।

चने ज़ोर गरम और अनारदाने का चूर्ण! हाँ, चने ज़ोर गरम की पुड़िया जो तब थी, वह अब भी नज़र आती है। पुराने कागज़ों से बनाई हुई इस पुड़िया में निरा हाथ का कमाल है। नीचे से तिरछी लपेटते हुए ऊपर से इतनी चौड़ी कि चने आसानी से हथेली पर पहुँच जाएँ। एक वक्त था जब फ़िल्म का गाना—चना ज़ोर गरम बाबू मैं लाया मजेदार, चना ज़ोर गरम—यह गाना उन दिनों स्कूल के हर बच्चे को आता था।

कुछ बच्चे पुड़िया पर तेज़ मसाला बुरकवाते। पूरा गिरजा मैदान घूमने तक यह पुड़िया चलती। एक-एक चना-पापड़ी मुँह में डालने और कदम उठाने में एक खास ही लय-रफ़्तार थी।

छुटपन में हमने शिमला रिज पर बहुत मज़े किए हैं। घोड़ों की सवारी की है। शिमला के हर बच्चे को कभी-न-कभी यह मौका मिल ही जाता था।

हम जाने क्यों घोड़ों को कुछ कमतर करके समझते। उन पर हँसते थे। ननिहाल के घोड़े खूब हृष्ट-पुष्ट और खूबसूरत। उनकी बात फिर कभी।

शाम को रंग-बिरंगे गुब्बारे। सामने जाखू का पहाड़। ऊँचा चर्च। चर्च की घंटियाँ बजतीं तो दूर-दूर तक उनकी गूँज फैल जाती। लगता, इसके संगीत से प्रभु ईशू स्वयं कुछ कह रहे हैं।

सामने आकाश पर सूर्यास्त हो रहा है। गुलाबी सुनहरी धारियाँ नीले आसमान पर फैल रही हैं। दूर-दूर फैले पहाड़ों के मुखड़े गहराने लगे और देखते-देखते बत्तियाँ टिमटिमाने लगीं। रिज पर की रौनक और माल की दुकानों की चमक के भी क्या कहने! स्कैंडल प्वाइंट की भीड़ से उभरता कोलाहल।

सरवर, स्कैंडल प्वाइंट के ठीक सामने उन दिनों एक दुकान हुआ करती थी, जिसके शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल बना हुआ था। इसकी पटरियाँ—उस पर खड़ी छोटे-छोटे डिब्बों वाली ट्रेन। एक ओर लाल टीन की छतवाला स्टेशन और सामने सिगनल देता खंबा—थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनी सुरंगें!

पिछली सदी में तेज़ रफ़्तारवाली गाड़ी वही थी। कभी-कभी हवाई जहाज़ भी देखने को मिलते! दिल्ली में जब भी उनकी आवाज़ आती, बच्चे उन्हें देखने बाहर दौड़ते। दीखता एक भारी-भरकम पक्षी उड़ा जा रहा है पंख फैलाकर। यह देखो और वह गायब! उसकी स्पीड ही इतनी तेज़ लगती। हाँ, गाड़ी के मॉडलवाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी जो मुझे कभी नहीं भूलती। यह वह दुकान थी जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था। वहाँ आँखों के डॉक्टर अंग्रेज़ थे।

शुरू-शुरू में चश्मा लगाना बड़ा अटपटा लगा। छोटे-बड़े मेरे चेहरे की ओर देखते और कहते—आँखों में कुछ तकलीफ़ है! इस उम्र में ऐनक! दूध पिया करो। मैं डॉक्टर साहिब का कहा दोहरा देती—कुछ देर पहनोगी तो ऐनक उतर जाएगी।

वैसे डॉक्टर साहिब ने पूरा आश्वासन दिया था, लेकिन चश्मा तो अब तक नहीं उतरा। नंबर बस कम ही होता रहा! मैं अपने-आप इसकी ज़िम्मेवार हूँ। जब आप दिन की रोशनी को छोड़कर रात में टेबल लैंप के सामने काम करेंगी—तो इसके अलावा और क्या होगा! हाँ, जब पहली बार मैंने चश्मा लगाया तो मेरे एक चचेरे भाई ने मुझे छेड़ा—देखो, देखो, कैसी लग रही है!

आँख पर चश्मा लगाया
ताकि सूझे दूर की
यह नहीं लड़की को मालूम
सूरत बनी लंगूर की!

मैं खीजी कि मुझ पर यह क्यों दोहराया जा रहा है! पर शेर बुरा न लगा।

जब वह चाय पीकर चले गए तो मैं अपने कमरे में जाकर आईने के सामने खड़ी हो गई। कई बार अपने को देखा। ऐनक उतारी। फिर पहनी। फिर उतारी। देखती रही—देखती रही।

सूरत बनी लंगूर की—
नहीं-नहीं-नहीं—
हाँ-हाँ-हाँ—

मैंने अपने छोटे भाई का टोपा उठाकर सिर पर रखा। कुछ अजीब लगा। अच्छा भी और मज़ाकिया भी।

तब की बात थी, अब तो चेहरे के साथ घुल-मिल गया है चश्मा। जब कभी उतरा हुआ होता है तो चेहरा खाली-खाली लगने लगता है।

याद आ गया वह टोपा–काली फ्रेम का चश्मा और लंगूर की सूरत! हाँ, इन दिनों शिमला में मैं सिर पर टोपी लगाना पसंद करती हूँ। मैंने कई रंगों की जमा कर ली हैं। कहाँ दुपट्टों का ओढ़ना और कहाँ सहज सहल सुभीते वाली हिमाचली टोपियाँ!

❑ ***कृष्णा सोबती***

प्रश्न-अभ्यास

संस्मरण से

1. उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका में क्या-क्या बदलाव हुए हैं? पाठ से मालूम करके लिखो।
2. लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थीं?
3. 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।'– यह कहकर लेखिका क्या-क्या बताती हैं?
4. पाठ से पता करके लिखो कि लेखिका के चश्मा लगाने पर उनके चचेरे भाई उन्हें क्यों छेड़ते थे।
5. लेखिका बचपन में कौन-कौन सी चीज़ें मज़ा ले-लेकर खाती थीं? उनमें से प्रमुख फलों के नाम लिखो।

संस्मरण से आगे

1. लेखिका की तरह तुम्हारी उम्र बढ़ने से तुम्हारे पहनने-ओढ़ने में क्या-क्या बदलाव आए हैं? उन्हें याद कर लिखो।
2. लेखिका के बचपन में ग्रामोफ़ोन, घुड़सवारी, शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल और हवाई जहाज़ की आवाज़ें ही आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़ें थीं। आज क्या-क्या आश्चर्यजनक आधुनिक चीज़ें तुम्हें आकर्षित करती हैं? उनके नाम लिखो।
3. अपने बचपन की किसी मनमोहक घटना को याद करके विस्तार से लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना करो कि तुम अपने माता-पिता के समान बड़े हो गए हो तो अनुमान करके बताओ कि तुम्हारे पहनने-ओढ़ने में क्या-क्या बदलाव हो सकता है और क्यों? इसे अपने दोस्तों को सुनाओ।
2. इस संस्मरण में लेखिका ने अपने बचपन की घटनाओं, यादों और क्रिया-कलापों को बताने की कोशिश की है। तुम बड़े होकर क्या-क्या कर सकते हो? अनुमान के आधार पर बताओ।
3. लेखिका ने इस संस्मरण में सरवर के माध्यम से अपनी बात बताने की कोशिश की है, लेकिन सरवर का कोई परिचय नहीं दिया गया है। अनुमान करके बताओ कि सरवर कौन हो सकता है।

भाषा की बात

1. क्रियाओं से भी भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे मारना से **मार**, काटना से **काट**, हारना से **हार**, सीखना से **सीख**, पलटना से **पलट** और हड़पना से **हड़प** आदि भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं। तुम भी इस संस्मरण से कुछ क्रियाओं को छाँट कर लिखो और उनसे भाववाचक संज्ञा बनाओ।

2. संस्मरण में आए अंग्रेज़ी के शब्दों को छाँटकर लिखो और उनके हिंदी अर्थ जानो।

3. **चार** दिन, **कुछ** व्यक्ति, **एक लीटर** दूध आदि शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दो तो पता चलेगा कि इसमें **चार**, **कुछ** और **एक लीटर** शब्द से संख्या या परिमाण का आभास होता है, क्योंकि ये संख्यावाचक विशेषण हैं। इसमें भी **चार** दिन से निश्चित संख्या का बोध होता है, इसलिए इसको निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं और **कुछ** व्यक्ति से अनिश्चित संख्या का बोध होने से इसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। इसी प्रकार **एक लीटर** दूध से परिमाण का बोध होता है इसलिए इसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। अब तुम नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो और उनके सामने विशेषण के भेदों को लिखो–

   (क) मुझे दो दर्जन केले चाहिए।
   (ख) दो किलो अनाज दे दो।
   (ग) कुछ बच्चे आ रहे हैं।
   (घ) तुम्हारा सारा प्रयत्न बेकार रहा।
   (ङ) सभी लोग हँस रहे थे।
   (च) तुम्हारा नाम बहुत सुंदर है।

4. कपड़ों में मेरी दिलचस्पियाँ मेरी मौसी जानती थीं।
   इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'दिलचस्पियाँ' और 'मौसी' संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण हैं। सर्वनाम कभी-कभी विशेषण का काम भी करते हैं। पाठ में से ऐसे पाँच उदाहरण छाँटकर लिखो।

कुछ करने को

1. क्या तुम अपनी पोशाक से खुश हो? अगर तुम्हें अपनी पोशाक बनाने को कहा जाए तो कैसी पोशाक बनाओगे और पोशाक बनाते समय किन बातों का ध्यान रखोगे? अपनी कल्पना से पोशाक का डिज़ाइन बनाओ।
2. तीन-तीन के समूह में अपने साथियों के साथ कपड़ों के नमूने इकट्ठा करके कक्षा में बताओ। इन नमूनों को छूकर देखो और अंतर महसूस करो। यह भी पता करो कि कौन सा कपड़ा किस मौसम में पहनने के लिए अनुकूल है।
3. हथकरघा और मिल के कपड़े बनाने के तरीके के बारे में आसपास के बड़ों से पता करो। संभव हो तो किसी कपड़े के कारखाने में जाकर भी जानकारी इकट्ठी करो।
4. भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, तरह-तरह के भोजन खाए जाते हैं, तरह-तरह की पोशाकें पहनी जाती हैं। कक्षा के बच्चे और शिक्षक अपने-अपने इलाकों की वेशभूषा के बारे में बातचीत करें। बच्चे इस काम में परिवार की भी मदद लें।

ध्यान देने योग्य शब्द

फ्रिल	-	झालर
ऑलिव ऑयल	-	जैतून का तेल
कैस्टर ऑयल	-	अरंडी का तेल
खुराक	-	निश्चित मात्रा
स्टॉक	-	संग्रह, भंडार
बुरकना	-	चूर्ण जैसी वस्तु को छिड़कना
छुटपन	-	बचपन
कमतर	-	ज़्यादा छोटा, लघुतर

हृष्ट-पुष्ट	-	तगड़ा, हट्टा -कट्टा
कोलाहल	-	शोर, हंगामा, हल्ला
अटपटा	-	टेढ़ा, कठिन, ऊटपटांग
आश्वासन	-	भरोसा
खीजना	-	झुंझलाना, क्रुद्ध होना
सहल	-	आसान

3. नादान दोस्त

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़िया को वहाँ आते-जाते देखा करते। सवेरे दोनों आँखें मलते कार्निस के सामने पहुँच जाते और चिड़ा और चिड़िया दोनों को वहाँ बैठा पाते। उनको देखने में दोनों बच्चों को न मालूम क्या मज़ा मिलता, दूध और जलेबी की सुध भी न रहती थी। दोनों के दिल में तरह-तरह के सवाल उठते। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? क्या खाते होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? लेकिन इन बातों का जवाब देने वाला कोई नहीं। न अम्मा को घर के काम-धंधों से फ़ुरसत थी न बाबू जी को पढ़ने-लिखने से। दोनों बच्चे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे लिया करते थे।

श्यामा कहती—क्यों भइया, बच्चे निकलकर फुर्र से उड़ जाएँगे?

केशव विद्वानों जैसे गर्व से कहता—नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे। बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे?

श्यामा—बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी?

केशव इस पेचीदा सवाल का जवाब कुछ न दे सकता था।

इस तरह तीन-चार दिन गुज़र गए। दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-दिन बढ़ती जाती थी। अंडों को देखने के लिए वे अधीर हो उठते थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब ज़रूर बच्चे निकल आए होंगे। बच्चों के चारे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ पाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे। गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे।

इस मुसीबत का अंदाज़ा करके दोनों घबरा उठे। दोनों ने फ़ैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए। श्यामा खुश होकर बोली—तब तो चिड़ियों को चारे के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा न?

केशव—नहीं, तब क्यों जाएँगी?

श्यामा—क्यों भइया, बच्चों को धूप न लगती होगी?

केशव का ध्यान इस तकलीफ़ की तरफ़ न गया था। बोला—ज़रूर तकलीफ़ हो रही होगी। बेचारे प्यास के मारे तड़पते होंगे। ऊपर छाया भी तो कोई नहीं।

आखिर यही फ़ैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए। पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया।

दोनों बच्चे बड़े चाव से काम करने लगे। श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई। केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और उसे खूब साफ़ करके उसमें पानी भरा।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से आए? फिर ऊपर बगैर छड़ियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ियाँ खड़ी होंगी कैसे?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा। आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी। श्यामा से बोला—जाकर कूड़ा फेंकनेवाली टोकरी उठा लाओ। अम्माँ जी को मत दिखाना।

श्यामा—वह तो बीच से फटी हुई है। उसमें से धूप न जाएगी?

केशव ने झुँझलाकर कहा—तू टोकरी तो ला, मैं उसका सूराख बंद करने की कोई हिकमत निकालूँगा।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सूराख में थोड़ा-सा कागज़ ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला—देख, ऐसे ही घोंसले पर उसकी आड़ कर दूँगा। तब कैसे धूप जाएगी?

श्यामा ने दिल में सोचा, भइया कितने चालाक हैं!

2

गर्मी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं। लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके आँखें बंद किए मौके का इंतज़ार कर रहे थे। ज्योंही मालूम हुआ कि अम्माँ जी अच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर

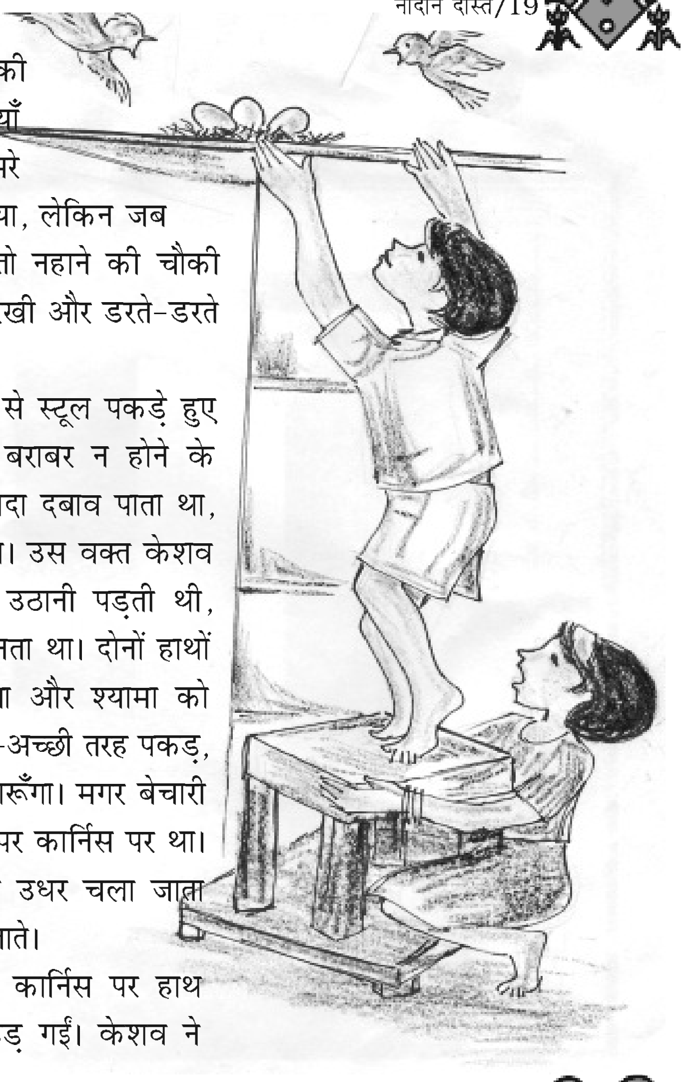

निकल आए। अंडों की हिफ़ाज़त की तैयारियाँ होने लगीं। केशव कमरे से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा।

श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी। स्टूल चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस तरफ़ ज़्यादा दबाव पाता था, ज़रा-सा हिल जाता था। उस वक्त केशव को कितनी तकलीफ़ उठानी पड़ती थी, यह उसी का दिल जानता था। दोनों हाथों से कार्निस पकड़ लेता और श्यामा को दबी आवाज़ से डाँटता–अच्छी तरह पकड़, वरना उतरकर बहुत मारूँगा। मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर कार्निस पर था। बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने

देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा—कै बच्चे हैं भइया?

केशव—तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।

श्यामा—ज़रा हमें दिखा दो भइया, कितने बड़े हैं?

केशव—दिखा दूँगा, पहले ज़रा चिथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।

श्यामा दौड़कर अपनी पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसकी कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा—हमको भी दिखा दो भइया।

केशव—दिखा दूँगा, पहले ज़रा वह टोकरी तो दे दो, ऊपर छाया कर दूँ।

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली—अब तुम उतर आओ, मैं भी तो देखूँ।

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा—जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा।

श्यामा प्याली और चावल भी लाई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख दीं और आहिस्ता से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा—अब हमको भी चढ़ा दो भइया।

केशव—तू गिर पड़ेगी।

श्यामा—न गिरूँगी भइया, तुम नीचे से पकड़े रहना।

केशव–न भइया, कहीं तू गिर-गिरा पड़ी तो अम्माँ जी मेरी चटनी ही कर डालेंगी। कहें कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर? अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे, तो उनको पालेंगे।

दोनों चिड़ियाँ बार-बार कार्निस पर आती थीं और बगैर बैठे ही उड़ जाती थीं। केशव ने सोचा, हम लोगों के डर से नहीं बैठतीं। स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा–तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्माँ जी से कह दूँगी।

केशव–अम्माँ जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।

श्यामा–तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं?

केशव–और गिर पड़ती तो चार सर न हो जाते!

श्यामा–हो जाते, हो जाते। देख लेना मैं कह दूँगी!

इतने में कोठरी का दरवाज़ा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा–तुम दोनों बाहर कब निकल आए? मैंने कहा न था कि दोपहर को न निकलना? किसने किवाड़ खोला?

किवाड़ केशव ने खोला था, लेकिन श्यामा ने माँ से यह बात नहीं कही। उसे डर लगा कि भइया पिट जाएँगे । केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे। अंडे न दिखाए थे, इससे अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ़ मुहब्बत के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से इसका फ़ैसला नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगी। अभी सिर्फ़ दो बजे थे। बाहर तेज़ लू चल रही थी। अब दोनों बच्चों को नींद आ गई थी।

3

चार बजे यकायक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई कार्निस के पास आई और ऊपर की तरफ़ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नज़र नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर ज़ोर से बोली–भइया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, बच्चे उड़ गए।

केशव घबराकर उठा और दौड़ा हुआ बाहर आया तो क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ़ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। सहमी हुई आँखों से ज़मीन की तरफ़ देखने लगा।

श्यामा ने पूछा–बच्चे कहाँ उड़ गए भइया?

केशव ने करुण स्वर में कहा–अंडे तो फूट गए।

श्यामा–और बच्चे कहाँ गए?

केशव–तेरे सर में। देखती नहीं है अंडों में से उजला-उजला पानी निकल आया है। वही तो दो-चार दिनों में बच्चे बन जाते।

माँ ने सोटी हाथ में लिये हुए पूछा–तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो?

श्यामा ने कहा–अम्माँ जी, चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं।

माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से बोलीं–तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।

अब तो श्यामा को भइया पर ज़रा भी तरस न आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े। इसकी उसे सज़ा मिलनी चाहिए। बोली–इन्होंने अंडों को छेड़ा था अम्माँ जी।

माँ ने केशव से पूछा–क्यों रे?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

माँ–तू वहाँ पहुँचा कैसे?

श्यामा–चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े अम्माँ जी।

केशव–तू स्टूल थाम नहीं खड़ी थी?

श्यामा–तुम्हीं ने तो कहा था।

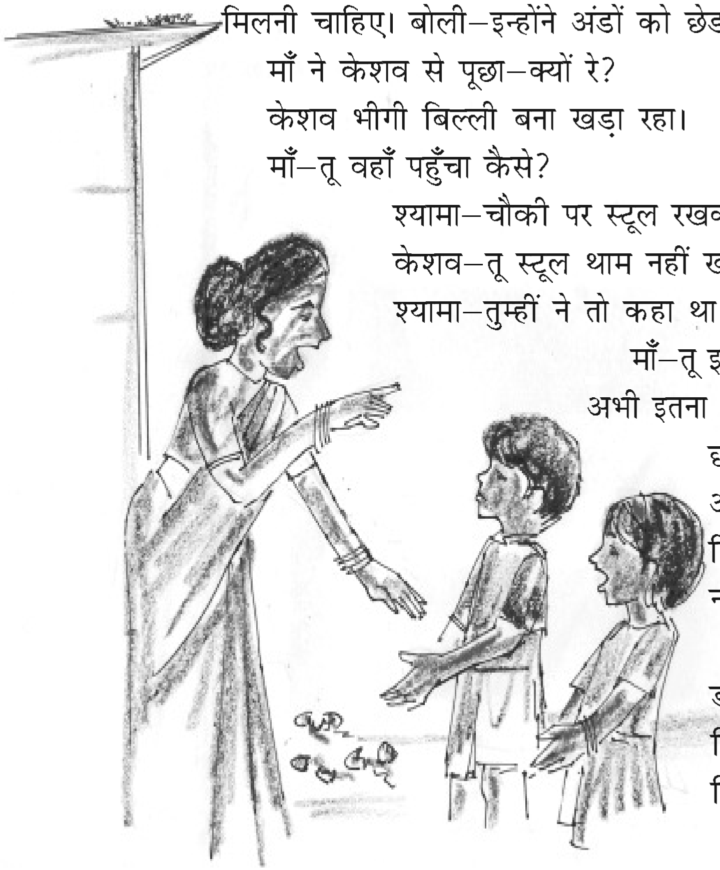

माँ–तू इतना बड़ा हुआ, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती।

श्यामा ने डरते-डरते पूछा–तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं अम्माँ जी?

माँ–और क्या करती! केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा। हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने!

केशव रोनी सूरत बनाकर बोला–मैंने तो सिर्फ़ अंडों को गद्दी पर रख दिया था अम्माँ जी!

माँ को हँसी आ गई। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफ़सोस होता रहा। अंडों की हिफ़ाज़त करने के जोग में उसने उनका सत्यानाश कर डाला। इसे याद कर वह कभी-कभी रो पड़ता था।

दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर न दिखाई दीं।

❑ ***प्रेमचंद***

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. केशव और श्यामा के मन में अंडों को देखकर तरह-तरह के सवाल क्यों उठते थे?
2. अंडों के बारे में दोनों आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दे दिया करते थे?
3. अंडों के टूट जाने के बाद माँ के यह पूछने पर कि–'तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।' के जवाब में श्यामा ने क्या कहा और उसने ऐसा क्यों किया?
4. पाठ के आधार पर बताओ कि अंडे गंदे क्यों हुए और उन अंडों का क्या हुआ?

5. सही उत्तर क्या है?
   अंडों की देखभाल के लिए केशव और श्यामा धीरे से बाहर निकले क्योंकि–
   (क) वे माँ की नींद नहीं तोड़ना चाहते थे।
   (ख) माँ नहीं चाहती थीं कि वे चिड़ियों की देखभाल करें।
   (ग) माँ नहीं चाहती थीं कि वे बाहर धूप में घूमें।
6. केशव और श्यामा ने चिड़िया और अंडों की देखभाल के लिए किन तीन बातों का ध्यान रखा?
7. कार्निस पर अंडों को देखकर केशव और श्यामा के मन में जो कल्पनाएँ आईं और उन्होंने चोरी-चुपके जो कुछ कार्य किए, क्या वे उचित थे? तर्क सहित उत्तर लिखो।
8. पाठ से मालूम करो कि माँ को हँसी क्यों आई? तुम्हारी समझ से माँ को क्या करना चाहिए था?

कहानी से आगे

1. पाठ में चिड़ियों की चर्चा है। तुम पेड़-पौधों और अन्य जीव-जंतुओं के बारे में जानकारी इकट्ठी करो। तुम्हारे आसपास जो मौजूद हों उसके साथ तुम्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसे लिखो।
2. केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में क्या-क्या अनुमान लगाए? यदि उस जगह तुम होते तो क्या अनुमान लगाते और क्या करते?
3. माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए? माँ के पूछने पर भी दोनों में से किसी ने किवाड़ खोलकर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया?
4. प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा। तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे?

अनुमान और कल्पना

1. इस पाठ में गर्मी के दिनों की चर्चा है। अगर सर्दी या बरसात के दिन होते तो क्या-क्या होता? अनुमान करो और अपने साथियों को सुनाओ।
2. पाठ पढ़कर मालूम करो कि दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर क्यों न दिखाई दीं? वे कहाँ गई होंगी? इस पर अपने दोस्तों के साथ मिलकर बातचीत करो।
3. अनजाने में हुई गलती पर केशव को कई दिनों तक अफ़सोस होता रहा। दोबारा उससे कोई ऐसी गलती न हो इसके लिए तुम उसे क्या सुझाव दे सकते हो, इसे लिखो।
4. केशव और श्यामा चिड़िया के अंडों को लेकर बहुत उत्सुक थे। क्या तुम्हें भी किसी नई चीज़, जगह या बात पर कौतूहल महसूस हुआ है? ऐसे किसी अनुभव का वर्णन करो और बताओ कि ऐसे में तुम्हारे मन में क्या-क्या सवाल उठे?

भाषा की बात

1. श्यामा माँ से बोली **मैंने आपकी** बातचीत सुन ली है।

   ऊपर दिए उदाहरण में **मैंने** का प्रयोग 'श्यामा' के लिए और **आपकी** का प्रयोग '**माँ**' के लिए हो रहा है। जब सर्वनाम का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले या किसी तीसरे के लिए हो, तो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। नीचे दिए गए वाक्यों में तीनों प्रकार के पुरुषवाचक सर्वनामों के नीचे रेखा खींचो–

   एक दिन दीपू और नीलू यमुना तट पर बैठे शाम की ठंडी हवा का आनंद ले रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि एक लंबा आदमी लड़खड़ाता हुआ उनकी ओर चला आ रहा है। पास आकर उसने बड़े दयनीय स्वर में कहा, ''मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। क्या आप मुझे कुछ खाने को दे सकते हैं?''

2. तगड़े बच्चे   मसालेदार सब्ज़ी
   बड़ा अंडा
   इसमें रेखांकित शब्द क्रमशः बच्चे, सब्ज़ी और अंडा की विशेषता यानी गुण बता रहे हैं इसलिए ऐसे विशेषणों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। इसमें व्यक्ति या वस्तु के अच्छे-बुरे हर तरह के गुण आते हैं। तुम चार गुणवाचक विशेषण लिखो और उनसे वाक्य बनाओ।
3. नीचे कुछ प्रश्नवाचक वाक्य दिए गए हैं, उन्हें बिना प्रश्नवाचक वाक्य के रूप में बदलो–
   अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होगें? क्या खाते होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है?
4. (क) केशव ने झुँझलाकर कहा...
   (ख) केशव रोनी सूरत बनाकर बोला...
   (ग) केशव घबराकर उठा...
   (घ) केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा...
   (ङ) श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा...
   ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखो। ये शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण का काम कर रहे हैं क्योंकि ये बताते हैं कि कहने, बोलने और उठने की क्रिया कैसे हुई। 'कर' वाले शब्दों के क्रियाविशेषण होने की एक पहचान यह भी है कि ये अकसर क्रिया से ठीक पहले आते हैं। अब तुम भी इन पाँच क्रियाविशेषणों का वाक्यों में प्रयोग करो।
5. नीचे प्रेमचंद की कहानी 'सत्याग्रह' का एक अंश दिया गया है। तुम इसे पढ़ोगे तो पाओगे कि विराम चिह्नों के बिना यह अंश अधूरा-सा है। तुम आवश्यकता के अनुसार उचित जगहों पर विराम चिह्न लगाओ–

उसी समय एक खोमचेवाला जाता दिखाई दिया 11 बज चुके थे चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया था पंडित जी ने बुलाया खोमचेवाले खोमचेवाला कहिए क्या दूँ भूख लग आई न अन्न-जल छोड़ना साधुओं का काम है हमारा आपका नहीं मोटेराम अबे क्या कहता है यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि ज़रा अपनी कुप्पी मुझे दे देखूँ तो वहाँ क्या रेंग रहा है मुझे भय होता है

कुछ करने को

- गर्मियों या सर्दियों में जब तुम्हारी लंबी छुट्टियाँ होती हैं, तो तुम्हारा दिन कैसे बीतता है? अपनी बुआ या किसी और को एक पोस्टकार्ड पर पत्र लिखकर बताओ।

ध्यान देने योग्य शब्द

कार्निस	-	दीवार की कँगनी
तसल्ली	-	सांत्वना, दिलासा, ढाढ़स
फुर्र	-	छोटी चिड़ियों के उड़ने में होने वाली परों की आवाज़
पेचीदा	-	उलझनवाला, कठिन, टेढ़ा
अधीर	-	उतावला, आकुल
सूराख	-	छेद
हिकमत	-	युक्ति, उपाय
हिफ़ाज़त	-	रक्षा
चिथड़े	-	फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़
आहिस्ता	-	धीरे से, धीरे-धीरे, धीमी आवाज़ से
यकायक	-	अचानक

4. चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

(एक दस-ग्यारह साल की लड़की)

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,

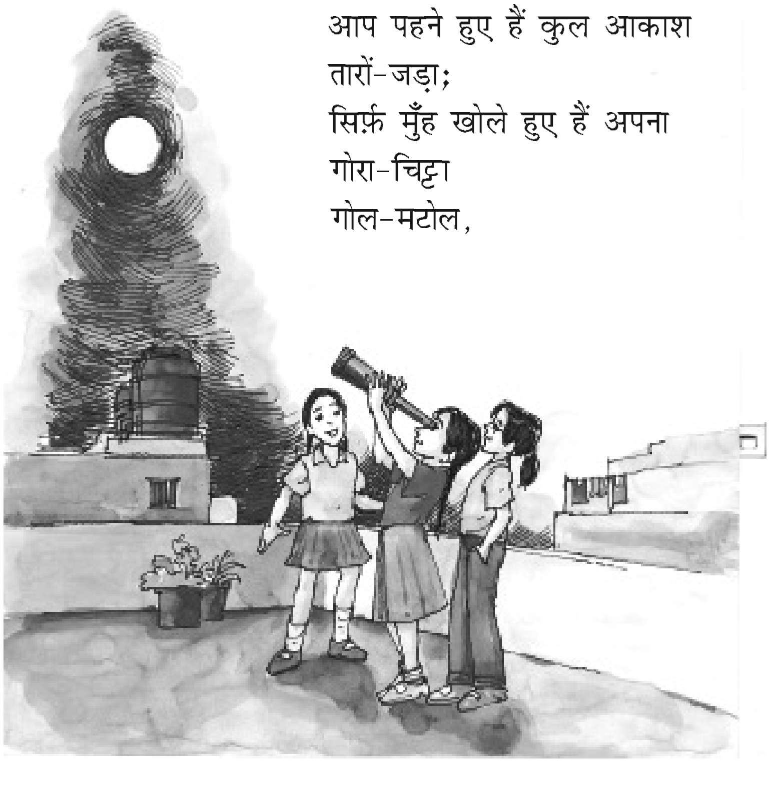

अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है:
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं–
दम नहीं लेते हैं जब तक बि ल कु ल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में...
आता है।

❑ ***शमशेर बहादुर सिंह***

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कविता में 'आप पहने हुए हैं कुल आकाश' कहकर लड़की क्या कहना चाहती है?

2. 'हमको बुद्धू ही निरा समझा है!' कहकर लड़की क्या कहना चाहती है?
3. आशय बताओ–
   'यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में
   आता है।'
4. कवि ने चाँद से गप्पें किस दिन लगाई होंगी? इस कविता में आई बातों की मदद से अनुमान लगाओ और इसके कारण भी बताओ।

   दिन — कारण

   पूर्णिमा ....

   अष्टमी से पूर्णिमा के बीच ....

   प्रथमा से अष्टमी के बीच ....
5. नई कविता में तुक या छंद की बजाय बिंब का प्रयोग अधिक होता है, बिंब वह तसवीर होती है जो शब्दों को पढ़ते समय हमारे मन में उभरती है। कई बार कुछ कवि शब्दों की ध्वनि की मदद से ऐसी तसवीर बनाते हैं और कुछ कवि अक्षरों या शब्दों को इस तरह छापने पर बल देते हैं कि उनसे कई चित्र हमारे मन में बनें। इस कविता के अंतिम हिस्से में चाँद को एकदम गोल बताने के लिए कवि ने **बि ल कु ल** शब्द के अक्षरों को अलग-अलग करके लिखा है। तुम इस कविता के और किन शब्दों को चित्र की आकृति देना चाहोगे? ऐसे शब्दों को अपने ढंग से लिखकर दिखाओ।

अनुमान और कल्पना

1. कुछ लोग बड़ी जल्दी चिढ़ जाते हैं, यदि चाँद का स्वभाव भी आसानी से चिढ़ जाने का हो तो वह किन बातों से सबसे ज़्यादा चिढ़ेगा? चिढ़कर वह उन बातों का क्या जवाब देगा? अपनी कल्पना से चाँद की ओर से दिए गए जवाब लिखो।

2. यदि कोई सूरज से गप्पें लगाए तो वह क्या लिखेगा? अपनी कल्पना से गद्य या पद्य में लिखो। इसी तरह की कुछ और गप्पें निम्नलिखित से किसी एक या दो से करके लिखो–

   पेड़ | बिजली का खंभा | सड़क | पेट्रोल पंप

भाषा की बात

1. **चाँद** संज्ञा है। **चाँदनी** रात में **चाँदनी** विशेषण है।
   नीचे दिए गए विशेषणों को ध्यान से देखो और बताओ कि कौन-सा प्रत्यय जुड़ने पर विशेषण बन रहे हैं। इन विशेषणों के लिए एक-एक उपयुक्त संज्ञा भी लिखो–
   गुलाबी पगड़ी / मखमली घास / कीमती गहने
   ठंडी रात / जंगली फूल / कश्मीरी भाषा
2. ● गोल-मटोल ● गोरा-चिट्टा
   कविता में आए शब्दों के इन जोड़ों में अंतर यह है कि **चिट्टा** का अर्थ सफ़ेद है और गोरा से मिलता-जुलता है जबकि **मटोल** अपने-आप में कोई शब्द नहीं है। यह शब्द 'मोटा' से बना है। ऐसे चार-चार शब्द युग्म सोचकर लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।
3. 'बिलकुल गोल' – कविता में इसके दो अर्थ हैं–
   (क) गोल आकार का
   (ख) गायब होना!
   ऐसे तीन शब्द सोचकर उनसे ऐसे वाक्य बनाओ कि शब्दों के दो-दो अर्थ निकलते हों।
4. जोकि, चूँकि, हालाँकि – कविता की जिन पंक्तियों में ये शब्द आए हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ो। ये शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

5. गप्प, गप-शप, गप्पबाज़ी – क्या इन शब्दों के अर्थ में अंतर है? तुम्हें क्या लगता है? लिखो।

कुछ करने को

1. क्या तुम जानते हो दुनियाभर में कई प्रकार के कैलेंडरों का इस्तेमाल होता है। नीचे दो प्रकार के कैलेंडर दिए गए हैं। इन्हें देखो और प्रश्नों के उत्तर दो।

   संवत् 2063 सन् 2006

   (क) इन कैलेंडरों में से कौन-सा कैलेंडर चंद्रमा के अनुसार है?

   (ख) क्या तुम्हारे आसपास इन दोनों कैलेंडरों का इस्तेमाल होता है? यदि होता है तो किन-किन मौकों पर?

   (ग) कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष का क्या अर्थ होता है?

2. चाँद से संबंधित कुछ कविताओं के बारे में जानकारी इकट्ठी करो और उसे कक्षा में शिक्षक को सुनाओ।

ध्यान देने योग्य शब्द

कुल	-	सारा
सिम्त	-	दिशा
गोकि	-	हालाँकि, यद्यपि
दम	-	साँस
मरज़ (मर्ज़)	-	बीमारी

5. अक्षरों का महत्व

अक्षरों की कहानी...

यह पुस्तक अक्षरों से बनी है। सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं। तरह-तरह की पुस्तकें। तरह-तरह के अक्षर।

दुनिया में अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं। हज़ारों पुस्तकें रोज़ छपती हैं। तरह-तरह के अक्षरों में हज़ारों की तादाद में रोज़ ही समाचार-पत्र

छपते रहते हैं। इन सबके मूल में हैं अक्षर। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि आदमी अक्षरों को न जानता, तो आज इस दुनिया का क्या हाल होता।

कोई कह सकता है कि हम अक्षरों को अनादि काल से जानते हैं। अक्षरों का ज्ञान हमें किसी ईश्वर से मिला है।

पुराने ज़माने के लोग सचमुच ही सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है। पर आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज किसी ईश्वर ने नहीं, बल्कि स्वयं आदमी ने की है। अब तो हम यह भी जानते हैं कि किन अक्षरों की खोज किस देश में किस समय हुई!

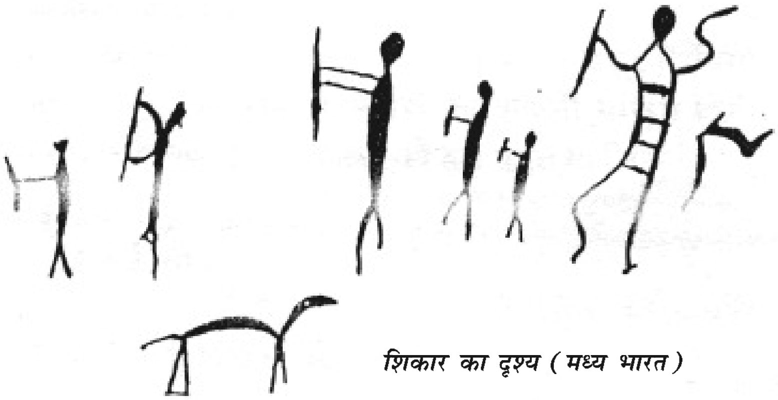

शिकार का दृश्य (मध्य भारत)

हमारी यह धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी है। दो-तीन अरब साल तक इस धरती पर किसी प्रकार के जीव-जंतु नहीं थे। फिर करोड़ों साल तक केवल जानवरों और वनस्पतियों का ही इस धरती पर राज्य रहा।

मध्य अमरीका के ओंज़िबवा आदिवासियों के चित्र

(दाईं ओर से बाईं ओर को क्रमशः) तूफ़ान का देवता जो सारे आकाश को घेरता है, नगाड़ा, पंखों से सुशोभित नगाड़ा, द्रोणकाक, कौवा और दवाखाने में आदमी।

आदमी ने इस धरती पर कोई पाँच लाख साल पहले जन्म लिया। धीरे-धीरे उसका विकास हुआ।

कोई दस हज़ार साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। वह खेती करने लगा। वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था। फिर उसने ताँबे और काँसे के भी औज़ार बनाए।

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे, पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए। जैसे, एक छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

तब जाकर काफ़ी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। केवल छह हज़ार साल!

अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तबसे मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जबसे लिखना शुरू किया तबसे 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है जबसे आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। इस प्रकार, इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं।

अतः हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता तो आज हम इतिहास को न जान पाते। हम यह न जान पाते कि पिछले कुछ हज़ार सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या-क्या सोचता था, कौन-कौन राजा हुए इत्यादि।

अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा। इस प्रकार, एक पीढ़ी के ज्ञान का इस्तेमाल दूसरी पीढ़ी करने लगी। अक्षरों की खोज करने के बाद पिछले छह हज़ार सालों में मानव जाति का तेज़ी से विकास हुआ।

यह महत्व है अक्षरों का और उनसे बनी हुई लिपियों का। अतः हम सबको अक्षरों की कहानी मालूम होनी चाहिए। आज जिन अक्षरों को हम पढ़ते या लिखते हैं वे कब बनाए गए, कहाँ बने और किसने बनाए, यह जानना ज़रूरी है भी।

❑ ***गुणाकर मुले***

प्रश्न-अभ्यास

निबंध से

1. पाठ में ऐसा क्यों कहा गया है कि अक्षरों के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई?
2. अक्षरों की खोज का सिलसिला कब और कैसे शुरू हुआ? पाठ पढ़कर उत्तर लिखो।
3. अक्षरों के ज्ञान से पूर्व मनुष्य अपनी बात को दूर-दराज़ के इलाकों तक पहुँचाने के लिए किन-किन माध्यमों का सहारा लेता था?
4. 'भाषा का विकास पहले हुआ, अक्षर और लिपि का बाद में। बोली गई भाषा को अक्षरों की मदद से लिखा जा सकता है। कई लोग ऐसे भी होते हैं जो अक्षर नहीं पहचानते, पर भाषा अच्छी तरह जानते हैं।'

   ऊपर की पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए भाषा और अक्षर के संबंधों के बारे में एक अनुच्छेद लिखो।

निबंध से आगे

1. अक्षरों के महत्व की तरह ध्वनि के महत्व के बारे में जितना जानते हो उसे लिखो।
2. रेडियो की भाषा लिखित नहीं, मौखिक है। मौखिक भाषा का जीवन में क्या महत्व होता है? इसे शिक्षक को कक्षा में सुनाओ।
3. हर वैज्ञानिक खोज के साथ किसी-न-किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है, लेकिन अक्षरों के साथ ऐसा नहीं है, क्यों? पता करो और शिक्षक को बताओ।
4. एक भाषा को कई लिपियों में लिखा जा सकता है। उसी तरह कई भाषाओं को एक ही लिपि में लिखा जा सकता है। आगे कुछ शब्द दिए गए हैं, जैसे– भारत, गांधी, भाषा। इन्हें एक से अधिक लिपियों में लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. पुराने ज़माने में लोग यह क्यों सोचते थे कि अक्षर और भाषा की खोज ईश्वर ने की थी? अनुमान लगाओ और बताओ।
2. अक्षरों के महत्व के साथ ही मनुष्य के जीवन में गीत, नृत्य और खेलों का भी महत्व है। अपने मित्रों के साथ बातचीत कर इनके महत्व के बारे में जानकारी इकट्ठी करो और शिक्षक को सुनाओ।
3. कल्पना करो कि यदि हमें अक्षरों का ज्ञान न होता तो क्या होता? लिखो।

भाषा की बात

- **अनादि काल** में रेखांकित शब्द का अर्थ है जिसकी कोई शुरुआत या आदि न हो। नीचे दिए गए शब्द भी मूल शब्द के शुरू में कुछ जोड़ने से बने हैं। इसे उपसर्ग कहते हैं। इन उपसर्गों को अलग करके लिखो और मूल शब्दों को लिखकर उनका अर्थ समझो–

असफल	....	अदृश्य	....
अनुचित	....	अनावश्यक	....
अपरिचित	....	अनिच्छा	....

(क) अब बताओ कि ये उपसर्ग जिन शब्दों के साथ जुड़ रहे हैं क्या उनमें कोई अंतर है?

(ख) उपर्युक्त शब्दों से वाक्य बनाओ और समझो कि ये संज्ञा हैं या विशेषण। वैसे तो संख्याएँ संज्ञा होती हैं पर कभी-कभी ये विशेषण का काम भी करती हैं, जैसे नीचे लिखे वाक्य में–

हमारी धरती लगभग **पाँच अरब** साल पुरानी है।

कोई **दस हज़ार** साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया।

इन वाक्यों में रेखांकित अंश 'साल' संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी दे रहे हैं, इसलिए संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण का इस्तेमाल उन्हीं चीज़ों के लिए होता है जिन्हें गिना जा सके। जैसे, चार संतरे, पाँच बच्चे, तीन शहर आदि। पर यदि किसी चीज़ को गिना नहीं जा सकता तो उसके साथ संख्या वाले शब्दों के अलावा माप-तौल आदि के शब्दों का इस्तेमाल भी किया जाता है–

- तीन जग पानी
- एक किलो ज़ीरा

यहाँ रेखांकित हिस्से परिमाणवाचक विशेषण हैं क्योंकि इनका संबंध माप-तौल से है। अब नीचे लिखे हुए को पढ़ो। खाली स्थानों में बॉक्स में दिए गए माप-तौल के उचित शब्द छाँटकर लिखो।

प्याला	कटोरी	एकड़	मीटर
लीटर	किलो	ट्रक	चम्मच

तीन	....	खीर	दो	....	ज़मीन
छह	....	कपड़ा	एक	....	रेत
दो	....	कॉफ़ी	पाँच	....	बाजरा
एक	....	दूध	तीन	....	तेल

कुछ करने को

1. अपनी लिपि के कुछ अक्षरों के बारे में जानकारी इकट्ठी करो–
   (क) जो अब प्रयोग में नहीं रहे।
   (ख) प्रचलित नए अक्षर जो अब प्रयोग में आ गए हैं।

2. लिखित और मौखिक भाषा के हानि-लाभ के बारे में दोस्तों के बीच चर्चा करो।
3. अक्षर और कंप्यूटर के संबंधों के बारे में जानकारी प्राप्त करो और इसे शिक्षक को सुनाओ।
4. अक्षर ध्वनियों (स्वरों और व्यंजनों) का प्रतीक होते हैं। उदाहरण के लिए 'हिंदी' 'उर्दू' और 'बाँग्ला' आदि शब्दों में प्रत्येक अक्षर के लिए उसकी ध्वनि निर्धारित है। कुछ चित्रों से भी संकेत व्यक्त होते हैं। नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। उससे क्या संकेत व्यक्त होते हैं, बताओ–

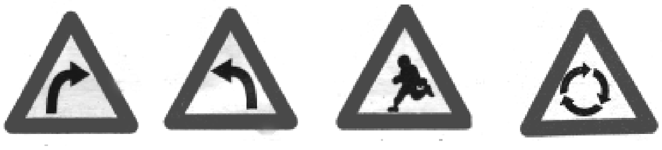

ध्यान देने योग्य शब्द

तादाद	–	संख्या
अनादिकाल	–	जो सदा से चला आ रहा हो
प्रागैतिहासिक मानव	–	इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का मानव
द्योतक	–	सूचक
सिलसिला	–	क्रम
पीढ़ी	–	किसी जाति, कुल या व्यक्ति की वंश परंपरा की कोई कड़ी

6. पार नज़र के

वह एक सुरंगनुमा रास्ता था। आम आदमी के लिए इस रास्ते से होते हुए जाने की मनाही थी....लेकिन छोटू ने एक दिन अपने पापा का सिक्योरिटी-पास लिया और जा पहुँचा सुरंग में.....फिर क्या हुआ?

''छोटू! कितनी बार कहा है तुमसे कि उस तरफ़ मत जाया करो!''

''फिर पापा क्यों जाते हैं उस तरफ़ रोज़-रोज़?''

''पापा को काम पर जाना होता है।''

रोज़ाना यही वार्तालाप हुआ करता था छोटू की माँ और छोटू के बीच। उस तरफ़ एक सुरंगनुमा रास्ता था और छोटू के पापा इसी सुरंग से होते हुए काम पर जाया करते थे। आम आदमी के लिए इस रास्ते से जाने की मनाही थी। चंद चुनिंदा लोग ही इस सुरंगनुमा रास्ते का इस्तेमाल कर सकते थे और छोटू के पापा इन्हीं चुनिंदा लोगों में से एक थे।

आज छुट्टी थी और छोटू के पापा घर ही पर आराम फ़रमा रहे थे। नज़र बचाकर,

चोरी-छुपे छोटू ने पापा का सिक्योरिटी-पास हथिया ही लिया और चल दिया सुरंग की तरफ़।

वैसे तो उनकी पूरी कालोनी ही ज़मीन के नीचे बसी थी। यह जो सुरंगनुमा रास्ता था—अंदर दीये जल रहे थे और प्रवेश करने से पहले एक बंद दरवाज़े का सामना करना पड़ता था। दरवाज़े में एक खाँचा बना हुआ था। छोटू ने खाँचे में कार्ड डाला, तुरंत दरवाज़ा खुल गया। छोटू ने सुरंग में प्रवेश किया। अंदर वाले खाँचे में सिक्योरिटी-पास आ पहुँचा था। उसे उठा लिया, कार्ड उठाते ही दरवाज़ा बंद हुआ। छोटू ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। सुरंगनुमा वह रास्ता ऊपर की तरफ़ जाता था....यानी ज़मीन के ऊपर का सफ़र कर आने का मौका मिल गया था।

मगर कहाँ? मौका हाथ लगते ही फिसल गया! सुरंग में जगह-जगह लगाए निरीक्षक यंत्रों की जानकारी छोटू को नहीं थी। मगर छोटू के प्रवेश करते ही पहले निरीक्षक यंत्र में संदेहास्पद स्थिति दर्शाने वाली हरकत हुई, इतने छोटे कद का व्यक्ति सुरंग में कैसे आया? दूसरे निरीक्षक यंत्र ने तुरंत छोटू की तसवीर खींच ली। किसी एक नियंत्रण केंद्र में इस तसवीर की जाँच की गई और खतरे की सूचना दी गई।

इन सारी गतिविधियों से अनजान छोटू आगे बढ़ रहा था। तभी जाने कहाँ से सिपाही दौड़े चले आए। छोटू को पकड़कर वापस घर छोड़ आए। घर पर माँ छोटू का इंतज़ार कर रही थी। बस, अब छोटू की खैरियत न थी। छोटू के पापा न होते तो छोटू का बचना मुश्किल था।

''छोड़ो भी! मैं इसे समझा दूँगा सब। फिर वह ऐसी गलती कभी नहीं करेगा।'' पापा ने छोटू को बचा लिया। बोले, ''छोटू, मैं जहाँ काम करता हूँ न, वह क्षेत्र ज़मीन से ऊपर है। आम आदमी वहाँ नहीं जा सकता, क्योंकि वहाँ के माहौल में जी ही नहीं सकता।''

''तो फिर आप कैसे जाते हैं वहाँ?'' छोटू का सवाल लाज़िमी था।

''मैं वहाँ एक खास किस्म का स्पेस-सूट पहनकर जाता हूँ। इस स्पेस-सूट से मुझे ऑक्सीजन मिलता है, जिससे मैं साँस ले सकता हूँ। इसी स्पेस-सूट की वजह से बाहर की ठंड से मैं अपने आपको बचा सकता हूँ। खास किस्म के जूतों की वजह से ज़मीन के ऊपर मेरा चलना मुमकिन होता है। ज़मीन के ऊपर चलने-फिरने के लिए हमें एक विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है।

छोटू सुन रहा था। पापा आगे बताने लगे, ''एक समय था जब अपने मंगल ग्रह पर सभी लोग ज़मीन के ऊपर ही रहते थे। बगैर किसी तरह के यंत्रों की मदद के, बगैर किसी खास किस्म की पोशाक के, हमारे पुरखे ज़मीन के ऊपर रहा करते थे लेकिन धीरे-धीरे वातावरण में परिवर्तन आने लगा। कई तरह के जीव धरती पर रहा करते थे, एक के बाद एक सब मरने लगे। इस परिवर्तन की जड़ में था–सूरज में हुआ परिवर्तन। सूरज से हमें रोशनी मिलती है, ऊष्णता मिलती है। इन्हीं तत्वों से जीवों का पोषण होता है। सूरज में परिवर्तन होते ही यहाँ का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया। प्रकृति के बदले हुए रूप का सामना करने में यहाँ के पशु-पक्षी, पेड़-पौधे अन्य जीव अक्षम साबित हुए। केवल हमारे पूर्वजों ने इस स्थिति का सामना किया।

''अपने तकनीकी ज्ञान के आधार पर हमने ज़मीन के नीचे अपना घर बना लिया। ज़मीन के ऊपर लगे विभिन्न यंत्रों के सहारे हम सूर्य-शक्ति, सूरज की रोशनी और गर्मी का इस्तेमाल करते आ रहे हैं। उन्हीं यंत्रों के सहारे हम यहाँ ज़मीन के नीचे जी रहे हैं। यंत्र सुचारू रूप से चलते रहें, इसके लिए बड़ी सतर्कता बरतनी पड़ती है। मुझ जैसे कुछ चुनिंदा लोग इन्हीं यंत्रों का ध्यान रखते है।''

''बड़ा हो जाऊँगा तो मैं भी यही काम करूँगा।'' छोटू ने अपनी मंशा ज़ाहिर की।

''बिलकुल! मगर उसके लिए खूब पढ़ना होगा। माँ और पापा की बात सुननी होगी!'' माँ ने कहा।

दूसरे दिन छोटू के पापा काम पर चले गए। देखा तो कंट्रोल रूम का वातावरण बदला-बदला-सा था। शिफ़्ट खत्म कर घर जा रहे स्टाफ़ के प्रमुख ने टी.वी. स्क्रीन की तरफ़ इशारा किया। स्क्रीन पर एक बिंदु झलक रहा था। वह बताने लगा, ''यह कोई आसमान का तारा नहीं है, क्योंकि कंप्यूटर से पता चल रहा है कि यह अपनी जगह अडिग नहीं रहा है। पिछले कुछ घंटों के दौरान इसने अपनी जगह बदली है। कंप्यूटर के अनुसार यह हमारी धरती की तरफ़ बढ़ता चला आ रहा है।''

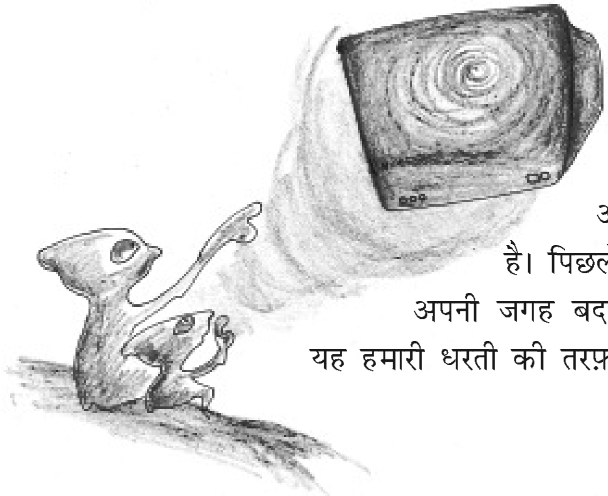

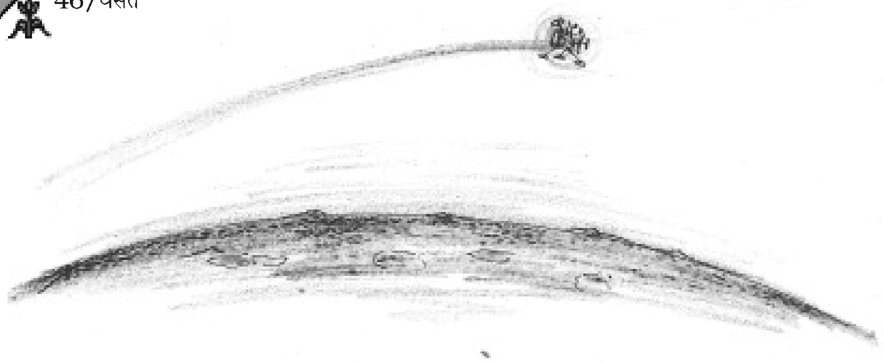

''अंतरिक्ष यान तो नहीं है?'' छोटू के पापा ने अपना संदेह प्रकट किया।

''संदेह हमें भी है। आप अब इस पर बराबर ध्यान रखिएगा।''

छोटू के पापा सोच में डूब गए।

क्या सचमुच अंतरिक्ष यान होगा? कहाँ से आ रहा होगा? सौर मंडल में हमारी धरती के अलावा और कौन से ग्रह पर जीवों का अस्तित्व होगा? कैसे हो सकता है? और अगर होगा भी तो क्या इतनी प्रगति कर चुका होगा कि अंतरिक्ष यान छोड़ सके?... वैसे तो हमारे पूर्वजों ने भी अंतरिक्ष यानों, उपग्रहों का प्रयोग किया था। मगर अब हमारे लिए यह असंभव है। उसके लिए आवश्यक मात्रा में ऊर्जा तो हो! काश! इस नए मेहमान को नज़दीक से देखा जा सकता! हाँ अगर वह इसी तरफ़ आ रहा होगा, तब तो यह संभव हो सकेगा। देखें।

...अब अंतरिक्ष यान से एक यांत्रिक हाथ बाहर निकला। हर पल उसकी लंबाई बढ़ती ही जा रही थी...

छोटू के पापा ने अवलोकन जारी रखा।

कालोनी की प्रबंध समिति की सभा बुलाई गई थी। अध्यक्ष भाषण दे रहे थे, ''हाल ही में मिली जानकारी से पता चलता है कि दो अंतरिक्ष यान हमारे मंगल ग्रह की तरफ़ बढ़ते चले आ रहे हैं। इनमें से एक अंतरिक्ष यान हमारे गिर्द चक्कर काट रहा है। कंप्यूटर के अनुसार ये अंतरिक्ष यान नज़दीक के ही किसी ग्रह से छोड़े गए हैं। ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिए–इसकी कोई सुनिश्चित योजना बनानी ज़रूरी है। नंबर एक आपका क्या खयाल है?''

कालोनी की सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी नंबर एक पर थी। उन्होंने कुछ कागज़ समेटते हुए बोलना आरंभ किया, ''इन दोनों अंतरिक्ष यानों को जलाकर खाक कर देने की क्षमता हम रखते हैं, मगर इससे हमें कोई जानकारी हासिल नहीं हो सकेगी। अंतरिक्ष यान बेकार कर ज़मीन पर उतरने पर मजबूर कर देने वाले यंत्र हमारे पास नहीं हैं। हालाँकि, अगर ये अंतरिक्ष यान खुद-ब-खुद ज़मीन पर उतरते हैं, तो उन्हें बेकार कर देने की क्षमता हममें अवश्य है। मेरी जानकारी के अनुसार इन अंतरिक्ष यानों में सिर्फ़ यंत्र हैं। किसी तरह के जीव इनमें सवार नहीं हैं।''

''नंबर एक की बात सही लगती है।'' नबंर दो एक वैज्ञानिक थे। वे बोले, ''हालाँकि यंत्रों को बेकार कर देने में भी खतरा है। इनके बेकार होते ही दूसरे ग्रह के लोग हमारे बारे में जान जाएँगे। इसलिए मेरी राय में हमें सिर्फ अवलोकन करते रहना चाहिए।''

''जहाँ तक हो सके हमें अपने अस्तित्व को छिपाए ही रखना चाहिए, क्योंकि हो सकता है जिन लोगों ने अंतरिक्ष यान भेजे हैं, वे कल को इनसे

भी बड़े सक्षम अंतरिक्ष यान भेजें। हमें यहाँ का प्रबंध कुछ इस तरह रखना चाहिए जिससे इन यंत्रों को यह गलतफ़हमी हो कि इस ज़मीन पर कोई भी चीज़ इतनी महत्वपूर्ण नहीं है कि जिससे वे लाभ उठा सकें। अध्यक्ष महोदय से मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि इस तरह का प्रबंध हमारे यहाँ किया जाए।'' नंबर तीन सामाजिक व्यवस्था का काम देखते थे।

उनकी बात के जवाब में अध्यक्ष कुछ बोलने जा ही रहे थे कि फ़ोन की घंटी बजी। अध्यक्ष ने चोंगा उठाया, एक मिनट बाद सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''भाइयो, अंतरिक्ष यान क्रमांक एक हमारी ज़मीन पर उतर चुका है।''

वह दिन छोटू के लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण दिन था। पापा उसे कंट्रोल रूम ले गए थे। यहाँ से अंतरिक्ष यान क्रमांक एक साफ़ नज़र आ रहा था।

''कैसा अजीब लग रहा है यहाँ! इसके अंदर क्या होगा पापा?'' छोटू ने पूछा।

''अभी नहीं बताया जा सकता। दूर से ही उसका निरीक्षण जारी है। उस पर बराबर हमारा ध्यान है और उसके हर अंग पर हमारा नियंत्रण है। वक्त आने पर ही हम अगला कदम उठाएँगे,'' छोटू के पापा ने बताया। उन्होंने छोटू को एक कॉन्सोल दिखाया, जिस पर कई बटन थे।

अब अंतरिक्ष यान से एक यांत्रिक हाथ बाहर निकला। हर पल उसकी लंबाई बढ़ती ही जा रही थी। वह शायद ज़मीन तक पहुँचकर मिट्टी उकेर लेना चाहता था। सब लोग स्क्रीन पर दिखाई दे रही अंतरिक्ष यान की इस हरकत को ध्यान से देख रहे थे – सिवा एक के, उसका ध्यान कहीं और ही था।

छोटू का सारा ध्यान था कॉन्सोल पैनेल पर। कॉन्सोल का एक बटन दबाने की अपनी इच्छा को वह रोक नहीं पाया। वह लाल-लाल बटन उसे बरबस अपनी तरफ़ खींच रहा था।

....और सहसा खतरे की घंटी बजी। सबकी निगाहें कॉन्सोल की तरफ़ मुड़ीं। पापा ने छोटू को अपनी तरफ खींचते हुए एक झापड़ रसीद कर दिया और लाल बटन को पूर्व स्थिति में ला रखा।

मगर उस तरफ़ अब अंतरिक्ष यान के उस यांत्रिक हाथ की हरकत सहसा रुक गई थी। यंत्र बेकार हो गया था।

उधर पृथ्वी पर नेशनल एअरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) द्वारा प्रस्तुत वक्तव्य ने सबका ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित कर लिया–

''मंगल की धरती पर उतरा हुआ अंतरिक्ष यान वाइकिंग अपना निर्धारित कार्य कर रहा है। हालाँकि किसी अज्ञात कारणवश अंतरिक्ष यान का यांत्रिक

हाथ बेकार हो गया है। नासा के तकनीशियन इस बारे में जाँच कर रहे हैं तथा इस यांत्रिक हाथ को दुरुस्त करने के प्रयास भी जारी हैं...''

इसके कुछ ही दिनों बाद पृथ्वी के सभी प्रमुख अखबारों ने छापा–

''नासा के तकनीशियनों को रिमोट कंट्रोल के सहारे वाइकिंग को दुरुस्त करने में सफलता मिली है। यांत्रिक हाथ ने अब मंगल की मिट्टी के विभिन्न नमूने इकट्ठे करने का काम आरंभ कर दिया है...''

पृथ्वी के वैज्ञानिक मंगल की इस मिट्टी का अध्ययन करने के लिए बड़े उत्सुक थे। उन्हें उम्मीद थी कि इस मिट्टी के अध्ययन से इस बात का पता लगाया जा सकेगा कि क्या मंगल ग्रह पर भी पृथ्वी की ही तरह जीव सृष्टि का अस्तित्व है। यह प्रश्न आज भी एक रहस्य है।

❑ ***जयंत विष्णु नार्लीकर***
(मराठी से अनुवादः रेखा देशपांडे)

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. छोटू का परिवार कहाँ रहता था?
2. छोटू को सुरंग में जाने की इजाज़त क्यों नहीं थी? पाठ के आधार पर लिखो।
3. कंट्रोल रूम में जाकर छोटू ने क्या देखा और वहाँ उसने क्या हरकत की?
4. इस कहानी के अनुसार मंगल ग्रह पर कभी आम जन-जीवन था। वह सब नष्ट कैसे हो गया? इसे लिखो।
5. कहानी में अंतरिक्ष यान को किसने भेजा था और क्यों?

6. नंबर एक, नंबर दो और नंबर तीन अजनबी से निबटने के कौन से तरीके सुझाते हैं और क्यों?

कहानी से आगे

1. (क) दिलीप एम. साल्वी (ख) जयंत विष्णु नार्लीकर
   (ग) आइज़क ऐसीमोव (घ) आर्थर क्लार्क
   ऊपर दिए गए लेखकों की अंतरिक्ष संबंधी कहानियाँ इकट्ठी करके पढ़ो और एक-दूसरे को सुनाओ। इन कहानियों में कल्पना क्या है और सच क्या है, इसे समझने की कोशिश करो। कुछ ऐसी कहानियाँ छाँटकर निकालो, जो आगे चलकर सच साबित हुई हैं।
2. इस पाठ में अंतरिक्ष यान अजनबी बनकर आता है। 'अजनबी' शब्द पर सोचो। इंसान भी कई बार अजनबी माने जाते हैं और कोई जगह या शहर भी। क्या तुम्हारी मुलाकात ऐसे किसी अजनबी से हुई है? नए स्कूल का पहला अनुभव कैसा था? क्या उसे भी अजनबी कहोगे? अगर हाँ तो 'अजनबीपन' दूर कैसे हुआ? इस पर सोचकर कुछ लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. यह कहानी ज़मीन के अंदर की ज़िंदगी का पता देती है। ज़मीन के ऊपर मंगल ग्रह पर सब कुछ कैसा होगा, इसकी कल्पना करो और लिखो।
2. मान लो कि तुम छोटू हो और यह कहानी किसी को सुना रहे हो तो कैसे सुनाओगे। सोचो और 'मैं' शैली में यह कहानी सुनाओ।

भाषा की बात

1. सिक्योरिटी-पास उठाते ही दरवाज़ा बंद हो गया।
   यह बात हम इस तरीके से भी कह सकते हैं–

जैसे ही कार्ड उठाया, दरवाज़ा बंद हो गया।

ध्यान दो, दोनों वाक्यों में क्या अंतर है। ऐसे वाक्यों के तीन जोड़े तुम स्वयं सोचकर लिखो।

2. छोटू ने चारों तरफ़ **नज़र दौड़ाई।**

   छोटू ने चारों तरफ़ **देखा**।

   उपर्युक्त वाक्यों में समानता होते हुए भी अंतर है।

   वाक्यों में मुहावरे विशिष्ट अर्थ देते हैं। नीचे दिए गए वाक्यांशों में 'नज़र' के साथ अलग-अलग क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। इनका वाक्यों या उचित संदर्भों में प्रयोग करो–

नज़र पड़ना	नज़र रखना
नज़र आना	नज़रें नीची होना

3. नीचे दो-दो शब्दों की कड़ी दी गई है। प्रत्येक कड़ी का एक शब्द संज्ञा है और दूसरा शब्द विशेषण है। वाक्य बनाकर समझो और बताओ कि इनमें से कौन-से शब्द संज्ञा हैं और कौन-से विशेषण।

   आकर्षक आकर्षण

   प्रभाव प्रभावशाली

   प्रेरणा प्रेरक

4. पाठ से फ़ और ज़ वाले (नुक्ते वाले) चार-चार शब्द छाँटकर लिखो। इस सूची में तीन-तीन शब्द अपनी ओर से भी जोड़ो।

ध्यान देने योग्य शब्द

सिक्योरिटी	-	सुरक्षा
चंद	-	कुछ
चुनिंदा	-	चुना हुआ

मौका	–	अवसर
संदेहास्पद	–	संदेहपूर्ण
खैरियत	–	कुशल
हरकत	–	हिलना-डोलना
कद	–	आकार, देह की ऊँचाई-लंबाई
माहौल	–	वातावरण, परिस्थिति
मुमकिन	–	संभव
किस्म	–	प्रकार
सतर्कता	–	सावधानी
शिफ़्ट	–	पारी
मंशा	–	इच्छा
अडिग	–	स्थिर
यान	–	वाहन
अवलोकन	–	निरीक्षण
प्रबंध	–	व्यवस्था
गिर्द	–	आसपास
खाक	–	धूल, मिट्टी, राख
गलतफ़हमी	–	गलत समझना
दरख्वास्त	–	निवेदन, अर्ज़ी
उकेरना	–	खोद कर उठाना
सहसा	–	अचानक
दुरुस्त	–	ठीक

7. साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना।
साथी हाथ बढ़ाना।
हम मेहनत वालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना।
मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना

अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना।
एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत
साथी हाथ बढ़ाना।

❑ ***साहिर लुधियानवी***

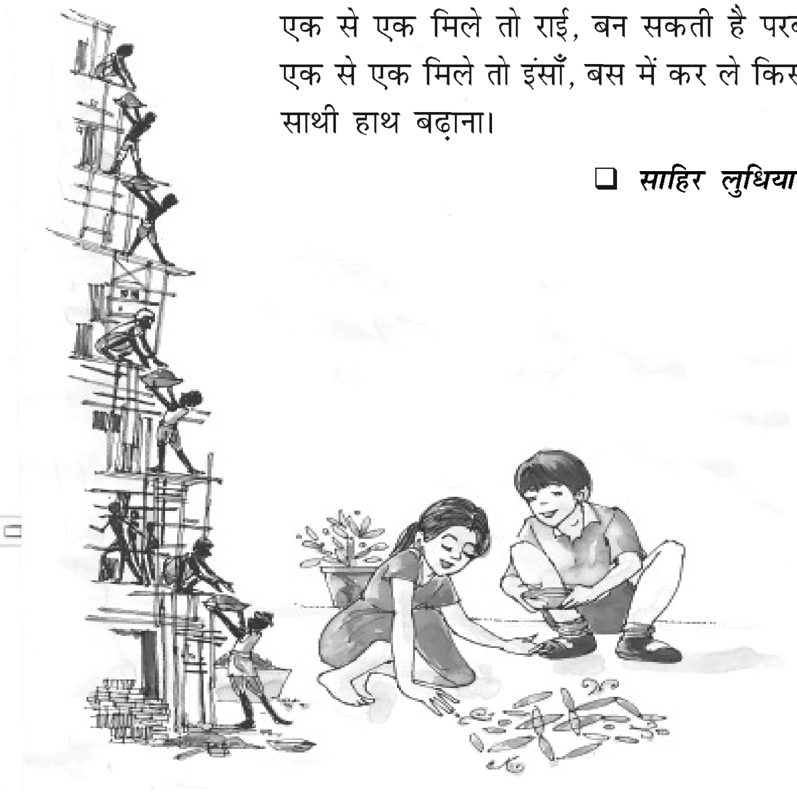

प्रश्न-अभ्यास

गीत के बारे में

1. यह गीत किसको संबोधित है?
2. इस गीत की किन पंक्तियों को तुम अपने आसपास की ज़िंदगी में घटते हुए देख सकते हो?
3. 'सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया'– साहिर ने ऐसा क्यों कहा है? लिखो।
4. गीत में सीने और बाँह को फ़ौलादी क्यों कहा गया है?

गीत से आगे

1. अपने आसपास तुम किसे 'साथी' मानते हो और क्यों? इससे मिलते-जुलते दस शब्द अपने शब्द-भंडार में जोड़ो।
2. 'अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक'
   कक्षा, मोहल्ले और गाँव के किस-किस तरह के साथियों के बीच तुम इस वाक्य की सच्चाई को महसूस कर पाते हो और कैसे?
3. इस गीत को तुम किस माहौल में गुनगुना सकते हो?
4. 'एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना'–
   (क) तुम अपने घर में इस बात का ध्यान कैसे रख सकते हो?
   (ख) पापा के काम और माँ के काम क्या-क्या हैं?
   (ग) क्या वे एक-दूसरे का हाथ बँटाते हैं?
5. यदि तुमने 'नया दौर' फ़िल्म देखी है तो बताओ कि यह गीत फ़िल्म में कहानी के किस मोड़ पर आता है? फिल्म देखो और बताओ।

भाषा की बात

1. - अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
   - एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं।

   (क) ऊपर लिखी कहावतों का अर्थ गीत की किन पंक्तियों से मिलता-जुलता है?

   (ख) इन दोनों कहावतों का अर्थ कहावत-कोश में देखकर समझो और वाक्य के संदर्भ में उनका प्रयोग करो।

2. नीचे हाथ से संबंधित कुछ मुहावरे दिए हैं। इनके अर्थ समझो और प्रत्येक मुहावरे से वाक्य बनाओ–

   (क) हाथ को हाथ न सूझना

   (ख) हाथ साफ़ करना

   (ग) हाथ-पैर फूलना

   (घ) हाथों-हाथ लेना

   (ङ) हाथ लगना

कुछ करने को

1. बात करते समय हाथ हमारी बात को प्रभावशाली ढंग से दूसरे तक पहुँचाते हैं–

'क्यों' पूछते हाथ	दुआ माँगते हाथ	मना करते हाथ
समझाते हाथ	बुलाते हाथ	आरोप लगाते हाथ
चेतावनी देते हाथ	नारा लगाते हाथ	सलाम करते हाथ

   इनका प्रयोग हम कब-कब करते हैं? लिखिए।

2. नीचे दिए शब्दों में 'हाथ' शब्द छिपा है। इन शब्दों को पढ़कर समझो और बताओ कि हाथों का इनमें क्या काम है?

हथकड़ी	हथगोला	हत्था	हाथापाई
निहत्था	हथकंडा	हथियार	हथकरघा

3. इस गीत के जिन शब्दों में नुक्ता लगा है, उन्हें छाँट कर लिखो। जो शब्द तुम्हारे लिए कुछ नए हैं, उनका वाक्यों में प्रयोग करो।
4. 'कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना।'
   इस वाक्य को हम देखें तो साहिर लुधियानवी इसमें यह कहना चाह रहे हैं–
   (तुमने) कल गैरों की खातिर (मेहनत) की, आज अपनी खातिर करना।
   इस वाक्य में 'तुम' कर्ता है जो गीत की पंक्ति में छंद बनाए रखने के लिए हटा दिया गया है। उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द 'अपनी' का प्रयोग कर्ता 'तुम' के लिए हो रहा है, इसलिए यह सर्वनाम है। ऐसे सर्वनाम जो अपने आप के बारे में बताएँ निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। (निज का अर्थ 'अपना' होता है।) निजवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार होते हैं जो नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित हैं–
   - मैं अपने आप (या आप) घर चली जाऊँगी।
   - बब्बन अपना काम खुद करता है।
   - सुधा ने अपने लिए कुछ नहीं खरीदा।

   अब तुम भी निजवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित रूपों का वाक्यों में प्रयोग करो–

अपने को	अपने से	अपना
अपने पर	अपने लिए	आपस में

ध्यान देने योग्य शब्द

बोझ	-	भार
फ़ौलादी	-	बहुत कड़ा या मज़बूत
राह	-	रास्ता
गैर	-	पराया, दूसरा

खातिर	–	के लिए
नेक	–	ईमानदार, भला
कतरा	–	बूँद
दरिया	–	नदी
ज़र्रा	–	रेत का कण
राई	–	छोटी सरसों का दाना
इंसाँ	–	आदमी

8. ऐसे-ऐसे

पात्र-परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी।

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन।

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ़्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़क वाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में। अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं। एक ओर रेडियो का सेट है। दो ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं। बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है। उस पर फ़ोन रखा है। परदा उठने पर – मोहन एक तख्त पर लेटा है। आठ-नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी। तीसरी क्लास में पढ़ता है। इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है। बार-बार पेट को पकड़ता है। उसके माता-पिता पास बैठे हैं।)

माँ : *(पुचकारकर)* न-न, ऐसे मत कर! अभी ठीक हुआ जाता है। अभी डॉक्टर को बुलाया है। ले, तब तक सेंक ले। *(चादर*

हटाकर पेट पर बोतल रखती है। फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है।) इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया?

पिता : कहाँ? कुछ भी नहीं। सिर्फ़ एक केला और एक संतरा खाया था। अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था। बस अड्डे पर आकर यकायक बोला – पिता जी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ : कैसे?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा। मैंने कहा – अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला – नहीं। फिर पूछा – चाकू-सा चुभता है? तो जवाब दिया – नहीं। गोला-सा फूटता है, तो बोला – नहीं। जो पूछा उसका जवाब – नहीं। बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है।

माँ : (*हँसकर*) हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे-ऐसे' क्या होता है? कोई नयी बीमारी तो नहीं? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है! हवाइयाँ उड़ रही हैं।

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था। खड़ा नहीं रहा गया। बस में भी नाचता रहा – मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है।

मोहन : (*ज़ोर से कराहकर*) माँ! ओ माँ!

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं। अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ़ जान पड़ती है। यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है। देखो न, कैसे लोट रहा है! ज़रा भी कल नहीं पड़ती। हींग, चूरन, पिपरमेंट – सब दे चुकी हूँ। वैद्य जी आ जाते!

(तभी फ़ोन की घंटी बजती है। मोहन के पिता उठाते हैं।)

पिता : यह 43332 है। जी, जी हाँ। बोल रहा हूँ...कौन? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है...जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं...बस यही कह रहा है...बस जी...नहीं, गिरा भी नहीं...

'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी, 'ऐसे-ऐसे!' यह 'ऐसे-ऐसे' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता।...जी...जी हाँ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है। नाचा... नाचता फिरता है...जी नहीं, दस्त तो नहीं आया...जी हाँ, पेशाब तो आया था...जी नहीं, रंग तो नहीं देखा। आप कहें तो अब देख लेंगे...अच्छा जी! ज़रा जल्दी आइए। अच्छा जी, बड़ी कृपा है। *(फ़ोन का चोंगा रख देते हैं।)* डॉक्टर साहब चल दिए हैं। पाँच मिनट में आ जाते हैं।

(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश। मोहन ज़ोर से कराहता है।)

मोहन : माँ...माँ...ओ...ओ...*(उलटी आती है। उठकर नीचे झुकता है। माँ सिर पकड़ती है। मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है। थूकता है, फिर लेट जाता है।)* हाय, हाय!

माँ : *(कमर सहलाती हुई)* क्या हो गया? दोपहर को भला-चंगा गया था। कुछ समझ में नहीं आता! कैसा पड़ा है! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़; इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

पिता : बड़ा नटखट है।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा!

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा। मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं। पर कोई डर नहीं। मैं वैद्य जी से कह आया हूँ। वे आ ही रहे हैं। ठीक कर देंगे।

मोहन : (*तेज़ी से कराहकर*) अरे....रे-रे-रे....ओह!

माँ : (*घबराकर*) क्या है, बेटा ? क्या हुआ ?

मोहन : (*रुआँसा-सा*) बड़े ज़ोर से ऐसे-ऐसे होता है। ऐसे-ऐसे।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे? ऐसे क्या होता है?

मोहन : ऐसे-ऐसे। (*पेट दबाता है।*)

(*वैद्य जी का प्रवेश*)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन? मैंने कहा, जय रामजी की! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या?

(*सब उठकर हाथ जोड़ते हैं। वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं।*)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था। दफ़्तर चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला – मेरे पेट में दर्द होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है। समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है!

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ। असल में बच्चा है। समझा नहीं पाता है। (*नाड़ी दबाकर*) वात का प्रकोप है...मैंने कहा, बेटा, जीभ तो

दिखाओ। *(मोहन जीभ निकालता है।)* कब्ज़ है। पेट साफ़ नहीं हुआ। *(पेट टटोलकर)* हूँ, पेट साफ़ नहीं है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। क्यों बेटा? *(हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं।)* ऐसे-ऐसे होता है?

मोहन : *(कराहकर)* जी हाँ....ओह!

वैद्य जी : *(हर्ष से उछलकर)* मैंने कहा न, मैं समझ गया। अभी पुड़िया भेजता हूँ। मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है। समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो। *(मोहन की माँ से)* आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है। दो-तीन दस्त होंगे। बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग!

(वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं। मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट। *(नोट देते हैं।)*

वैद्य जी : *(नोट लेते हैं।)* अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं? आप और हम क्या दो हैं?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं। तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं।)

डॉक्टर : हैलो मोहन! क्या बात है? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया?

(माँ और पिता जी फिर उठते हैं। मोहन कराहता है। डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता।

डॉक्टर : (*पेट दबाने लगते हैं।*) अभी देखता हूँ। जीभ तो दिखाओ बेटा। (*मोहन जीभ निकालता है।*) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है? ऐसे-ऐसे?
(*मोहन बोलता नहीं, कराहता है।*)

माँ : बताओ, बेटा! डॉक्टर साहब को समझा दो।

मोहन : जी...जी...ऐसे-ऐसे। कुछ ऐसे-ऐसे होता है। (*हाथ से बताता है। उँगलियाँ भींचता है।*) डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है।

डॉक्टर : (*सहसा गंभीर होकर*) वह तो मैं देख रहा हूँ। चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है। असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं। कौलिक पेन तो है नहीं। और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता। (*बराबर पेट टटोलता रहता है।*)

माँ : (*काँपकर*) फोड़ा!

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है। बिलकुल नहीं है। (*मोहन से*) ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ निकालो। (*मोहन जीभ निकालता है।*) हाँ, कब्ज़ ही लगता है। कुछ बदहज़मी भी है। (*उठते हुए*) कोई बात नहीं। दवा भेजता हूँ। (*पिता से*) क्यों न आप ही चलें! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी। कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंदा डाल लेती है। बस उसी की ऐंठन है।
(*डॉक्टर जाते हैं। मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं।*)

माँ : सेंक तो दूँ, डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : (*दूर से*) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए।

(*डॉक्टर जाते हैं। माँ बोतल उठाती है। पड़ोसिन आती है।*)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन?

माँ : आओ जी, रामू की काकी! कैसा क्या होता! लोचा-लोचा फिरे है। जाने वह 'ऐसे-ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया।

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया। नए-नए बुखार निकल आए हैं। वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है। आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था। वहाँ भी कुछ नहीं खाया। आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है।

(*बाहर से आवाज़ आती है - 'मोहन! मोहन!'। फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है।*)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (*पुकारकर*) आ जाइए!

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है! क्यों, भाई? (*पास आकर*) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है। दादा, कल तो स्कूल जाना है। तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी। क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है। समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है। इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ। अक्सर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है।

माँ : सच! क्या बीमारी है यह?

मास्टर : अभी बताता हूँ। (*मोहन से*) अच्छा साहब! दर्द तो दूर हो ही जाएगा। डरो मत। बेशक कल स्कूल मत आना। पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है?
(*मोहन चुप रहता है।*)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं।

मास्टर : हाँ, बोलो, बेटा।

(मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है। फिर इनकार में सिर हिलाता है।)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ।

मास्टर : हूँ ! शायद सवाल रह गए हैं।

मोहन : जी!

मास्टर : तो यह बात है। 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है।

माँ : *(चौंककर)* क्या?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है।)

मास्टर : *(हँसकर)* कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज खयाल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा–'ऐसे-ऐसे'! अच्छा, उठिए साहब! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। *(मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है।)* अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा।

(मोहन उठता है। माँ ठगी-सी देखती है। दो ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो जान निकल गई। पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग। *(पिता से)* देखा जी आपने!

पिता : *(चकित होकर)* क्या-क्या हुआ?

माँ : क्या-क्या होता! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

पिता : हें!

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह!

पिता : वाह, बेटा जी, वाह! तुमने तो खूब छकाया!

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है।)

❑ ***विष्णु प्रभाकर***

प्रश्न-अभ्यास

एकांकी से

1. 'सड़क के किनारे एक सुंदर फ़्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाज़ा सड़क वाले बरामदे में खुलता है..............उस पर एक फ़ोन रखा है।' इस बैठक की पूरी तस्वीर बनाओ।
2. माँ मोहन के 'ऐसे-ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी?
3. ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. जब तुम्हारी तबीयत खराब होती है तो तुम्हारे घरवालों का व्यवहार तुम्हारे प्रति कैसा रहता है? इसे शिक्षक को बताओ।
2. मान लो कि तुम मोहन की तबीयत पूछने जाते हो। तुम अपने और मोहन के बीच की बातचीत को संवाद के रूप में लिखो।
3. 'नाटक' शब्द का आम ज़िंदगी में कब-कब इस्तेमाल किया जाता हैं? सोच कर लिखो।
4. संकट के समय के लिए कौन-कौन से नंबर याद रखे जाने चाहिए। पुलिस, फ़ायर ब्रिगेड और डॉक्टर से तुम कैसे बात करोगे?

भाषा की बात

- (क) मोहन ने केला और संतरा खाया।
  (ख) मोहन ने केला और संतरा नहीं खाया।
  (ग) मोहन ने क्या खाया?
  (घ) मोहन केला और संतरा खाओ।

  उपर्युक्त वाक्यों में से पहला वाक्य एकांकी से लिया गया है। बाकी तीन वाक्य देखने में पहले वाक्य से मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ अलग-अलग हैं। पहला वाक्य किसी कार्य या बात के होने के बारे में बताता है। इसे विधिवाचक वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य का संबंध उस कार्य के न होने से है, इसलिए उसे निषेधवाचक वाक्य कहते है। (निषेध का अर्थ नहीं या मनाही होता है।)तीसरे वाक्य में इसी बात को प्रश्न के रूप में पूछा जा रहा है, ऐसे वाक्य प्रश्नवाचक कहलाते हैं। चौथे वाक्य में मोहन से उसी कार्य को करने के लिए कहा जा रहा है। इसलिए उसे आदेशवाचक वाक्य कहते हैं। अगले पृष्ठ पर एक वाक्य दिया गया है। इसके बाकी तीन रूप तुम सोचकर लिखो–

बताना	:	रुथ ने कपड़े अलमारी में रखे।
नहीं/मना करना	:	....
पूछना	:	....
आदेश देना	:	....

ध्यान देने योग्य शब्द

गलीचा	–	सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ कालीन।
अंट-शंट	–	फ़ालतू चीज़ें
गड़-गड़	–	गरजने की आवाज़
कल	–	चैन
बला	–	कष्ट
भला-चंगा	–	स्वस्थ, तंदरुस्त, अच्छा-खासा
गुलज़ार	–	चहल-पहल वाला
धमा-चौकड़ी	–	उछल-कूद, कूद-फाँद, ऊधम
वात	–	शरीर में रहने वाली वायु के बढ़ने से होनेवाला रोग
प्रकोप	–	बीमारी का बढ़ना, बहुत अधिक या बढ़ा हुआ कोप
तबीयत	–	शरीर या मन की स्थिति
बदहज़मी	–	अपच, अजीर्ण
रौनक	–	चहल-पहल

9. टिकट-अलबम

अब राजप्पा को कोई नहीं पूछता। आजकल सब-के-सब नागराजन को घेरे रहते। 'नागराजन घमंडी हो गया है', राजप्पा सारे लड़कों में कहता फिरता। पर लड़के भला कहाँ उसकी बातों पर ध्यान देते! नागराजन के मामा जी ने सिंगापुर से एक अलबम भिजवाया था। वह लड़कों को दिखाया करता। सुबह पहली घंटी के बजने तक सभी लड़के नागराजन को घेरकर अलबम

देखा करते। आधी छुट्टी के वक्त भी उसके आसपास लड़कों का जमघट लगा रहता। कई लोग टोलियों में उसके घर तक हो आए। नागराजन शांतिपूर्वक सभी को अपना अलबम दिखाता, पर किसी को हाथ नहीं लगाने देता। अलबम को गोद में रख लेता और एक-एक पन्ना पलटता, लड़के बस देखकर खुश होते।

और तो और कक्षा की लड़कियाँ भी उस अलबम को देखने के लिए उत्सुक थीं। पार्वती लड़कियों की अगुवा बनी और अलबम माँगने आई। लड़कियों में वही तेज़-तर्रार मानी जाती थी। नागराजन ने कवर चढ़ाकर अलबम उसे दिया। शाम तक लड़कियाँ अलबम देखती रहीं फिर उसे वापस कर दिया।

अब राजप्पा के अलबम को कोई पूछने वाला नहीं था। वाकई उसकी शान अब घट गई थी। राजप्पा के अलबम की, लड़कों में काफ़ी तारीफ़ रही थी। मधुमक्खी की तरह उसने एक-एक करके टिकट जमा किए थे। उसे तो बस एक यही धुन सवार थी। सुबह आठ बजे वह घर से निकल पड़ता। टिकट जमा करने वाले सारे लड़कों के चक्कर लगाता। दो ऑस्ट्रेलिया के टिकटों के बदले एक फिनलैंड का टिकट लेता। दो पाकिस्तान के बदले एक रूस का। बस शाम, जैसे ही घर लौटता, बस्ता कोने में पटककर अम्मा से चबेना लेकर निकर की जेब में भर लेता और खड़े-खड़े कॉफी पीकर निकल जाता। चार मील दूर अपने दोस्त के घर से कनाडा का टिकट लेने पगडंडियों में होकर भागता। स्कूल भर में उसका अलबम सबसे बड़ा था। सरपंच के लड़के ने उसके अलबम को पच्चीस रुपए में खरीदना चाहा था,

पर राजप्पा नहीं माना। 'घमंडी कहीं का', राजप्पा बड़बड़ाया था। फिर उसने तीखा जवाब दिया था, "तुम्हारे घर में जो प्यारी बच्ची है न, उसे दे दो न तीस रुपए में।" सारे लड़के ठहाका मारकर हँस पड़े थे।

पर अब? कोई उसके अलबम की बात तक नहीं करता। और तो और अब सब उसके अलबम की तुलना नागराजन के अलबम से करने लगे हैं। सब कहते हैं राजप्पा का अलबम फिसड्डी है।

पर राजप्पा ने नागराजन के अलबम को देखने की इच्छा कभी नहीं प्रकट की। लेकिन जब दूसरे लड़के उसे देख रहे होते तो वह नीची आँखों से देख लेता। सचमुच नागराजन का अलबम बेहद प्यारा था। पर राजप्पा के

पास जितने टिकट थे उतने नागराजन के अलबम में नहीं थे। पर खुद उसका अलबम ही कितना प्यारा था। उसे छू लेना ही कोई बड़ी बात थी। इस तरह का अलबम यहाँ थोड़ी मिलेगा। अलबम के पहले पृष्ठ पर मोती जैसे अक्षरों में उसके मामा ने लिख भेजा था–

ए. एम. नागराजन

'इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज जब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा।'

लड़कों ने इसे अपने अलबम में उतार लिया। लड़कियों ने झट कापियों और किताबों में टीप लिया।

"तुम लोग यह नकल क्यों करते हो? नकलची कहीं के", राजप्पा ने लड़कों को घुड़की दी। सब चुप रहे पर कृष्णन से नहीं रहा गया।

"जा, जा। जलता है, ईर्ष्यालू कहीं का।"

"मैं काहे को जलूँ? जले तेरा खानदान। मेरा अलबम उसके अलबम से कहीं बड़ा है।" राजप्पा ने शान बघारी।

"अरे, उसके पास जो टिकटें हैं, वह है कहीं तेरे पास? सब क्यों? बस एक इंडोनेशिया का टिकट दिखा दो। अरे, पानी भरोगे, हाँ।" कृष्णन ने छेड़ा।

"पर मेरे पास जो टिकट है, वह कहाँ है उसके पास?" राजप्पा ने फिर ललकारा।

"उसके पास जो टिकट है वही दिखा दो।" कृष्णन भी कम नहीं था।

"ठीक है, दस रुपए की शर्त। मेरे वाले टिकट दिखा दो।"

"तुम्हारा अलबम कूड़ा है" कृष्णन चीखा, "हाँ, हाँ कूड़ा।"

लड़के जैसे कोरस गाने लगे।

राजप्पा को लगा, अपने अलबम के बारे में बातें करना फ़ालतू है। उसने कितनी मेहनत और लगन से टिकट बटोरे हैं। सिंगापुर से आए इस एक पार्सल ने नागराजन को एक ही दिन में मशहूर कर दिया। पर दोनों में कितना अंतर है! ये लड़के क्या समझेंगे?

राजप्पा मन-ही-मन कुढ़ रहा था। स्कूल जाना अब खलने लगा था और लड़कों के सामने जाने में शर्म आने लगी। आम तौर पर शनिवार और रविवार को टिकट की खोज में लगा रहता, परंतु अब घर-घुसा हो गया था। दिन में कई बार अलबम को पलटता रहता। रात को लेट जाता। सहसा जाने क्या सोचकर उठता, ट्रंक खोलकर अलबम निकालता और एक बार पूरा देख जाता। उसे अलबम से चिढ़ होने लगी थी। उसे लगा, अलबम वाकई कूड़ा हो गया है।

उस दिन शाम उसने जैसे तय कर लिया था, वह नागराजन के घर गया। अब कोई कितना अपमान सहे! नागराजन के हाथ अचानक एक अलबम लगा है, बस यही ना। वह क्या जाने टिकट कैसे जमा किए जाते हैं! एक-एक टिकट की क्या कीमत होती है वह भला क्या समझे! सोचता होगा टिकट जितना बड़ा होगा, वह उतना ही कीमती होगा। या फिर सोचता होगा, बड़े देश का टिकट कीमती होगा। वह भला क्या समझे!

उसके पास जितने भी फ़ालतू टिकट हैं उन्हें टरका कर, उससे अच्छे टिकट झाड़ लेगा। कितनों को तो उसने यूँ ही उल्लू बनाया है। कितनी चालबाज़ी करनी पड़ती है। नागराजन भला किस खेत की मूली है?

राजप्पा नागराजन के घर पहुँचकर ऊपर गया। चूँकि वह अकसर आया-जाया करता था, सो किसी ने नहीं टोका। ऊपर पहुँचकर वह नागराजन की मेज़ के पास पड़ी कुरसी पर बैठ गया। कुछ देर बाद नागराजन की बहन कामाक्षी ऊपर आई।

''भैया शहर गया है। अरे हाँ, तुमने भैया का अलबम देखा?'' उसने पूछा।

"हूँ", राजप्पा को हाँ कहने में हेकड़ी हो रही थी।

"बहुत सुंदर अलबम है ना? सुना है स्कूल भर में किसी के भी पास इतना बड़ा अलबम नहीं है।"

"तुमसे किसने कहा?"

"भैया ने।"

वह कुढ़ गया।

"बड़े से क्या मतलब हुआ? आकार में बड़ा हुआ तो अलबम बड़ा हो गया?" उसकी चिड़चिड़ाहट साफ़ थी।

कामाक्षी कुछ देर तक वहीं रही। फिर नीचे चली गई। राजप्पा मेज़ पर बिखरी किताबों को टटोलने लगा। अचानक उसका हाथ दराज़ के ताले से टकरा गया। उसने ताले को खींचकर देखा। बंद था, क्यों न उसे खोलकर देख लिया जाए। मेज़ पर से उसने चाबी ढूँढ़ निकाली।

सीढ़ियों के पास जाकर उसने एक बार झाँककर देखा। फिर जल्दी में दराज़ खोली। अलबम ऊपर ही रखा हुआ था। पहला पृष्ठ खोला। उन वाक्यों को उसने दोबारा पढ़ा। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। अलबम को झट कमीज़ के नीचे खोंस लिया और दराज़ बंद कर दिया। सीढ़ियाँ उतरकर घर की ओर भागा।

घर जाकर सीधा पुस्तक की अलमारी के पास गया और पीछे की ओर अलबम छिपा दिया। उसने बाहर आकर झाँका। पूरा शरीर जैसे जलने लगा था। गला सूख रहा था और चेहरा तमतमाने लगा था।

रात आठ बजे अपू आया। हाथ-पाँव हिलाकर उसने पूरी बात कह सुनाई।

"सुना तुमने, नागराजन का अलबम खो गया। हम दोनों शहर गए हुए थे लौटकर देखा तो अलबम गायब!"

राजप्पा चुप रहा। उसने अपू को किसी तरह टाला। उसके जाते ही उसने झट कमरे का दरवाज़ा भेड़ लिया और अलमारी के पीछे से अलबम निकालकर देखा। उसे फिर छिपा दिया। डर था कहीं कोई देख न ले।

रात में खाना नहीं खाया। पेट जैसे भरा हुआ था। सारा घर चिंतित हो गया। उसका चेहरा भयानक हो गया था।

रात, उसने सोने की कोशिश की पर नींद नहीं आई। अलबम सिरहाने तकिए के नीचे रखकर सो गया।

सुबह अपू दोबारा आया। राजप्पा तब भी बिस्तर पर बैठा था। अपू सुबह नागराजन के घर होकर आया था। "कल तुम उसके घर गए थे?" अपू ने पूछा।

राजप्पा की साँस जैसे ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। फिर सिर हिला दिया। वह जिस तरह चाहे सोच ले।

"कामाक्षी ने कहा था कि हमारे जाने के बाद खाली तुम वहाँ आए थे।" अपू बोला। राजप्पा को समझते देर नहीं लगी कि अब सब उस पर शक करने लगे हैं।

"कल रात से नागराजन लगातार रोए जा रहा है। उसके पापा शायद पुलिस को खबर दें।" अपू ने फिर कहा।

राजप्पा फिर भी चुप रहा।

"उसके पापा डी.एस.पी. के दफ़्तर में ही तो काम करते हैं। बस वह पलक झपक दें और पुलिस की फ़ौज हाज़िर।" अपू जैसे आग में घी डाल रहा था।

यह तो भला हुआ कि अपू का भाई उसे ढूँढ़ता हुआ आ गया और अपू चलता बना।

राजप्पा के पापा दफ़्तर चले गए थे। बाहर का किवाड़ बंद था। राजप्पा अभी तक बिस्तर पर बैठा हुआ था। आधा घंटा गुज़र गया और वह उसी तरह बैठा रहा।

तभी बाहर की साँकल खटकी।

'पुलिस', राजप्पा बुदबुदाया।

भीतर साँकल लगी थी। दरवाज़ा खटकने की आवाज़ तेज़ हो गई। राजप्पा ने तकिए के नीचे से अलबम उठाया और ऊपर भागा। अलमारी के पीछे छिपा दे? नहीं। पुलिस ने अगर तलाशी ली तो पकड़ा जाएगा। अलबम को कमीज़ के नीचे छिपाकर वह नीचे आ गया। बाहर का दरवाज़ा अब भी बज रहा था।

"कौन है? अरे दरवाज़ा क्यों नहीं खोलता?" अम्मा भीतर से चिल्लाईं। थोड़ी देर और हुई तो अम्मा खुद ही उठकर चली आएँगी।

राजप्पा पिछवाड़े की ओर भागा। जल्दी से बाथरूम में घुसकर दरवाज़ा बंद कर लिया। अम्मा ने अँगीठी पर गरम पानी की देगची चढ़ा रखी थी। उसने अलबम को अँगीठी में डाल दिया। अलबम जलने लगा। कितने प्यारे टिकट थे। राजप्पा की आँखों में आँसू आ गए।

तभी अम्मा की आवाज़ आई, "जल्दी से आ तो नहाकर। नागराजन तुझे ढूँढ़ता हुआ आया है।" राजप्पा ने निकर उतार दी और गीला तौलिया लपेटकर बाहर आ गया। कपड़े बदलकर वह ऊपर गया। नागराजन कुरसी पर बैठा हुआ था। उसे देखते ही बोला, "मेरा अलबम खो गया है यार।" उसका चेहरा उतरा हुआ था। काफ़ी रोकर आया था शायद।

"कहाँ रखा था तुमने?" राजप्पा ने पूछा।

"शायद दराज़ में। शहर से लौटा तो गायब।"

नागराजन की आँखों में आँसू आ गए। राजप्पा से चेहरा बचाकर उसने आँखें पोंछ लीं।

"रो मत यार।" राजप्पा ने उसे पुचकारा। वह फफक-फफक कर रो दिया।

राजप्पा झट नीचे उतरकर गया। एक मिनट में वह ऊपर नागराजन के सामने था। उसके हाथ में उसका अपना अलबम था।

"लो यह रहा मेरा अलबम। अब इसे तुम रख लो। ऐसे क्यों देख रहे हो। मज़ाक नहीं कर रहा। सच कहता हूँ, इसे अब तुम रख लो।"

"बहला रहे हो यार।" नागराजन को जैसे यकीन नहीं आया।

"नहीं यार। सचमुच तुमको दे रहा हूँ। रख लो।"

राजप्पा भला अपना अलबम उसे दे दे! कैसा चमत्कार है! नागराजन को अब भी यकीन नहीं आ रहा था। पर राजप्पा अपनी बात बार-बार दोहरा रहा था। उसका गला भर आया था।

"ठीक है, मैं इसे रख लेता हूँ। पर तुम क्या करोगे?"

"मुझे नहीं चाहिए।"

"क्यों, तुम्हें एक भी टिकट नहीं चाहिए?"

"नहीं।"

"पर तुम कैसे रहोगे बगैर किसी टिकट के?"

"रोता क्यों है यार!"

"ले, इस अलबम को तू ही रख ले। इतनी मेहनत की है तूने।" नागराजन बोला।

"नहीं, तुम रख लो। लेकर चले जाओ। जाओ, चले जाओ यहाँ से।" वह चीखा और फूट-फूटकर रो दिया।

नागराजन की समझ में कुछ नहीं आया। वह अलबम लेकर नीचे उतर गया।

कमीज़ से आँखें पोंछता हुआ राजप्पा भी नीचे उतर आया। दोनों साथ-साथ दरवाज़े तक आए।

"बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं घर चलूँ?" नागराजन सीढ़ियाँ उतरने लगा।

"सुनो राजू", राजप्पा ने पुकारा। नागराजन ने उसे पलटकर देखा। "अलबम दे दो। मैं आज रात जी भरकर इसे देखना चाहता हूँ। कल सुबह तुम्हें दे जाऊँगा।"

"ठीक है।" नागराजन ने उसे अलबम लौटा दी और चला गया।

राजप्पा ऊपर आया। उसने दरवाज़ा बंद कर लिया और अलबम को छाती से लगाकर फूट-फूटकर रो दिया।

❑ ***सुंदरा रामस्वामी***

(तमिल से अनुवाद : सुमति अय्यर)

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. अलबम पर किसने और क्यों लिखा? इसका असर क्लास के दूसरे लड़के-लड़कियों पर क्या हुआ?
2. नागराजन के अलबम के हिट हो जाने के बाद राजप्पा के मन की क्या दशा हुई?
3. अलबम चुराते समय राजप्पा किस मानसिक स्थिति से गुज़र रहा था?
4. राजप्पा ने नागराजन का टिकट-अलबम अँगीठी में क्यों डाल दिया?
5. लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्खी से क्यों की?

कहानी से आगे

1. टिकटों की तरह ही बच्चे और बड़े दूसरी चीज़ें भी जमा करते हैं। सिक्के उनमें से एक हैं। क्या तुम कुछ अन्य चीज़ों के बारे में सोच सकते हो जिन्हें जमा किया जा सकता है? उनके नाम लिखो।
2. टिकट-अलबम का शौक रखने के राजप्पा और नागराजन के तरीके में क्या फ़र्क है? तुम अपने शौक के लिए कौन-सा तरीका अपनाओगे?
3. इकट्ठा किए हुए टिकटों का अलग-अलग तरह से वर्गीकरण किया जा सकता है। जैसे, देश के आधार पर। ऐसे और आधार सोचकर लिखो।
4. कई लोग चीज़ें इकट्ठा कर 'गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में अपना नाम दर्ज करवाते हैं। इसके पीछे उनकी क्या प्रेरणा होती होगी? सोचो और अपने दोस्तों से इस पर बातचीत करो।

अनुमान और कल्पना

1. राजप्पा अलबम के जलाए जाने की बात नागराजन को क्यों नहीं कह पाता है? अगर वह कह देता तो क्या कहानी के अंत पर कुछ फ़र्क पड़ता? कैसे?

2. 'ऑस्ट्रेलिया के दो टिकटों के बदले फ़िनलैंड का एक टिकट लेता। दो पाकिस्तान के बदले एक रूस का।' वह ऐसा क्यों करता था?
3. कक्षा के बाकी विद्यार्थी स्वयं अलबम क्यों नहीं बनाते थे? वह राजप्पा और नागराजन के अलबम के दर्शक मात्र क्यों रह जाते हैं? अपने शिक्षक को बताओ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को कहानी में ढूँढ़कर उनका अर्थ समझो। अब स्वयं सोचकर इनसे वाक्य बनाओ–

खोंसना	जमघट	टटोलना	कुढ़ना
अगुआ	पुचकारना	खलना	हेकड़ी

2. कहानी से व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए प्रयुक्त हुए 'नहीं' अर्थ देने वाले शब्दों (नकारात्मक विशेषण) को छाँटकर लिखो। उनका उल्टा अर्थ देने वाले शब्द भी लिखो।

कुछ करने को

1. मान लो कि स्कूल में तुम्हारी कोई प्रिय चीज़ खो गई है। तुम चाहते हो कि जिसे वह चीज़ मिले वह तुम्हें लौटा दे। इस संबंध में स्कूल के बोर्ड पर लगाने के लिए एक नोटिस तैयार करो जिसमें निम्नलिखित बिंदु हों–
   (क) खोई हुई चीज़ का वर्णन
   (ख) कहाँ खोई
   (ग) मिल जाने पर कहाँ लौटाई जाए
   (घ) नोटिस लगाने वाले/वाली का नाम और कक्षा
2. डाक टिकटों के बारे में और जानना चाहते हो तो नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से छपी पुस्तक 'डाक टिकटों की कहानी' पढ़ो।

सुनना-सुनाना

1. राजप्पा और नागराजन की तरह क्या तुम भी कोई गंभीर शौक रखते हो? उससे जुड़े किस्से सुनाओ।
2. कुछ कहानियाँ सुखांत होती हैं और कुछ कहानियाँ दु:खांत होती हैं। इस कहानी के अंत को तुम क्या मानोगे? बताओ।

पढ़ो और समझो

- कुढ़ता चेहरा
- ईर्ष्यालू चेहरा
- भूखा चेहरा
- चालबाज़ चेहरा
- घमंडी चेहरा
- भयभीत चेहरा
- अपमानित चेहरा
- रुआँसा चेहरा

ध्यान देने योग्य शब्द

जमघट	-	आदमियों की भीड़, जमाव
टोली	-	मंडली, झुंड
उत्सुक	-	इच्छुक
चबेना	-	चबाकर खाने वाली खाद्य सामग्री
पगडंडी	-	खेत या मैदान में पैदल चलने वालों के लिए बना पतला रास्ता
फिसड्डी	-	काम में पीछे रह जाने वाला
टीपना	-	हू-ब-हू उतारना, नकल करके लिखना
बघारना	-	पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना
कोरस	-	एक साथ मिलकर गाना
मशहूर	-	प्रसिद्ध, जाना-माना
खलना	-	अखरना

टरकाना	-	खिसका देना, टाल देना
हेकड़ी	-	ज़बरदस्ती, बलात कुछ करने की प्रवृत्ति
भेड़ लेना	-	भिड़ा देना, सटा देना, बंद करना
साँकल	-	दरवाज़ा बंद करने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की कड़ी

10. झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

नि:सन्तान मरे राजा जी
रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

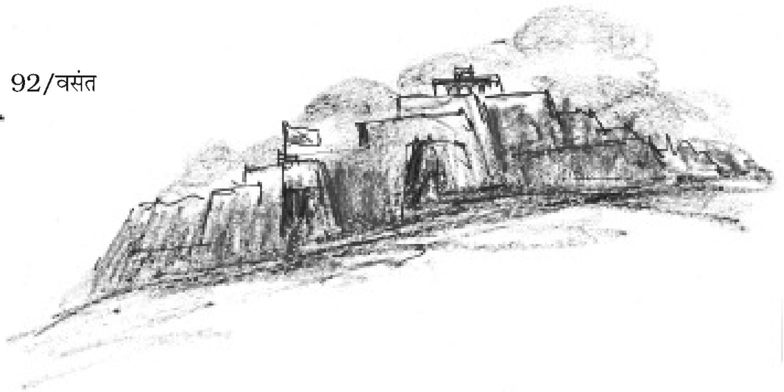

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी रोईं रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेज़ार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
'नागपुर के ज़ेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',

यों परदे की इज़्ज़त पर-
देशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,

जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती,
उनकी जो कुरबानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ़्टिनेन्ट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

ज़ख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,

पर, पीछे ह्यू रोज़ आ गया,
हाय ! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

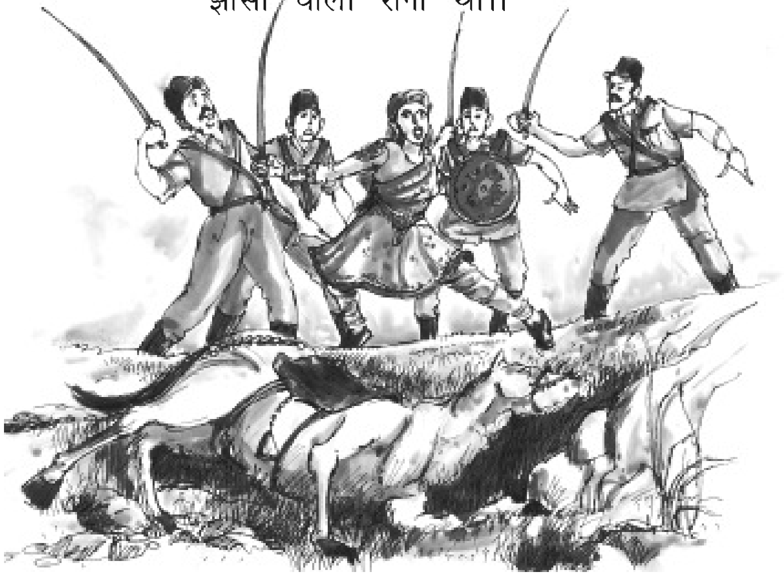

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारत वासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

❑ *सुभद्रा कुमारी चौहान*
('मुकुल' से)

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. 'किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई'
   (क) इस पंक्ति में किस घटना की ओर संकेत है?
   (ख) काली घटा घिरने की बात क्यों कही गई है?
2. कविता की दूसरी पंक्ति में भारत को 'बूढ़ा' कहकर और उसमें 'नई जवानी' आने की बात कहकर सुभद्रा कुमारी चौहान क्या बताना चाहती हैं?
3. झाँसी की रानी के जीवन की कहानी अपने शब्दों में लिखो और यह भी बताओ कि उनका बचपन तुम्हारे बचपन से कैसे अलग था?
4. वीर महिला की इस कहानी में कौन-कौन से पुरुषों के नाम आए हैं? इतिहास की कुछ अन्य वीर स्त्रियों की कहानियाँ खोजो।

5. झाँसी की रानी के जीवन से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं?
6. अंग्रेज़ों के कुचक्र के विरुद्ध रानी ने अपनी वीरता का परिचय किस प्रकार दिया?
7. रानी के विधवा होने पर डलहौज़ी क्यों प्रसन्न हुआ? उसने क्या किया?
8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करो–
   (क) गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी।
   (ख) लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।

अनुमान और कल्पना

1. कविता में स्वाधीनता संग्राम के किस दौर की बात है?
2. सुभद्रा कुमारी चौहान लक्ष्मीबाई को 'मर्दानी' क्यों कहती हैं?
3. 'बरछी', 'कृपाण', 'कटारी' उस ज़माने के हथियार थे। आजकल प्रयोग में लाए जाने वाले हथियारों के नाम लिखो।
4. सन् 1857 के युद्ध के बारे में जानकारी प्राप्त करो। अगर तुम उस युद्ध के दौर में होते तो कल्पना कर बताओ कि क्या करते।

कुछ करने को

1. इस कविता में जिन जगहों के नाम आए हैं उनको भारत के नक्शे पर दिखाओ और सन् 1857 के विद्रोह के दौरान लक्ष्मीबाई की यात्रा दिखाओ।
2. इस कविता का सामूहिक सस्वर पाठ करो और गीति नाट्य के रूप में भी इसे प्रस्तुत करो।
3. इस कविता की जो भी पंक्तियाँ तुम्हें अच्छी लगती हों उन्हें छाँटकर लिखो और उन पर अपने दोस्तों के साथ बातचीत करो।

भाषा की बात

- नीचे लिखे वाक्यांशों (वाक्य के हिस्सों) को पढ़ो–

झाँसी की रानी	जेसिका का भाई	प्रेमचंद की कहानी
मिट्टी के घड़े	पाँच मील की दूरी	नहाने का साबुन
रशीद का दफ़्तर	रेशमा के बच्चे	बनारस के आम

का, **के** और **की** दो संज्ञाओं का संबंध बताते हैं। ऊपर दिए गए वाक्यांशों में अलग-अलग जगह इन तीनों का प्रयोग हुआ है। ध्यान से पढ़ो और कक्षा में बताओ कि **का**, **के** और **की** का प्रयोग कहाँ और क्यों हो रहा है?

पढ़ने को

1. प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'भारत की महान नारियाँ' शृंखला की पुस्तकें।
2. चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित कमला शर्मा द्वारा लिखित उपन्यास 'अपराजिता'।

ध्यान देने योग्य शब्द

भृकुटी	–	भौंहें
गुमी	–	खोई
फ़िरंगी	–	विदेशी, अंग्रेज़, भारत में यह शब्द अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त
बुंदेले हरबोलों	–	बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं के यश गाती थीं।
छबीली	–	सुंदर
गाथा	–	कहानी

व्यूह रचना	–	समूह, युद्ध में सुदृढ़ रक्षा-पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम में खड़ा होना
सुभट	–	रणकुशल, योद्धा
विरुदावली	–	विस्तृत कीर्ति गाथा, बड़ाई
मुदित	–	मोदयुक्त, आनंदित
विकट	–	भयंकर, दुर्गम, कठिन
घात	–	छल, चाल
बिसात	–	सामर्थ्य
निपात	–	गिरना, पतन
बेज़ार	–	परेशान
आह्वान	–	बुलावा, आमंत्रण
ज्वाला	–	आग
दिव्य	–	बढ़िया, भव्य
काम आना	–	युद्ध में मारा जाना, शहीद होना
द्वंद्व	–	संघर्ष
निरंतर	–	लगातार
अभिराम	–	सुंदर, मोहक
समाधि	–	चिता पर बनाया गया स्मारक
कुरबानी	–	बलिदान, त्याग
कालगति	–	मृत्यु
अपार	–	जिसका पार न हो, असीम, असंख्य
मनुज	–	मनुष्य

11. जो देखकर भी नहीं देखते

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ, यह परखने के लिए कि वह क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापिस लौटीं। मैंने उनसे पूछा, ''आपने क्या-क्या देखा?''

''कुछ खास तो नहीं,'' उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटा भर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज़ न देखे? मुझे – जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, को भी सैकड़ों रोचक चीज़ें मिल जाती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं

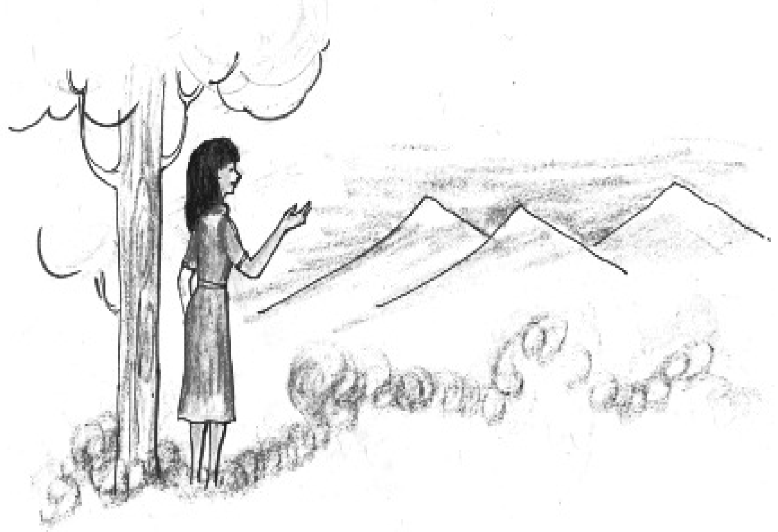

आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीज़ों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीज़ों को सिर्फ़ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। परंतु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज़ समझते हैं, जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा जा सकता है।

❑ ***हेलेन केलर***

प्रश्न-अभ्यास

निबंध से

1. 'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं'– हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?
2. 'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

3. 'कुछ खास तो नहीं'– हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों हुआ?
4. हेलेन केलर प्रकृति की किन चीज़ों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ पढ़कर इसका उत्तर लिखो।
5. 'जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा जा सकता है।'– तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

निबंध से आगे

1. आज तुमने अपने घर से आते हुए बारीकी से क्या-क्या देखा-सुना? मित्रों के साथ सामूहिक चर्चा कीजिए।
2. कान से न सुनने पर आस पास की दुनिया कैसी लगती होगी? इस पर टिप्पणी लिखो और साथियों के साथ विचार करो।
3. कई चीज़ों को छूकर ही पता चलता है, जैसे–कपड़े की चिकनाहट या खुरदरापन, पत्तियों की नसों का उभार आदि। ऐसी और चीज़ों की सूची तैयार करो जिनको छूने से उनकी खासियत का पता चलता है।
4. हम अपनी पाँचों इंद्रियों में से आँखों का इस्तेमाल सबसे ज़्यादा करते हैं। ऐसी चीज़ों के अहसासों की तालिका बनाओ जो तुम बाकी चार इंद्रियों से महसूस करते हो–

   सुनना　　चखना　　सूँघना　　छूना

5. तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने का मौका मिले जिसे दिखाई न देता हो तो तुम उससे प्रकृति के उसके अनुभवों के बारे में क्या-क्या पूछना चाहोगे और क्यों?

अनुमान और कल्पना

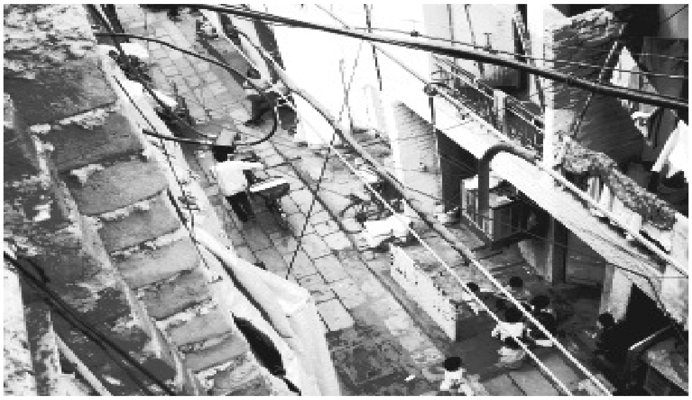

1. इस तसवीर में तुम्हारी पहली नज़र कहाँ जाती है?
2. गली में क्या-क्या चीज़ें हैं?
3. कौन-कौन-सी चीज़ें हैं, जो तुम्हारा ध्यान अपनी ओर खींच रही हैं?
4. इस गली में हमें कौन-कौन-सी आवाज़ें सुनाई देंगी?

भाषा की बात

1. पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताओ कि किन चीज़ों का स्पर्श ऐसा होता है –

चिकना	....	चिपचिपा	....
मुलायम	....	खुरदरा	....
लिजलिजा	....	ऊबड़-खाबड़	....
सख्त	....	भुरभुरा	....

2. अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी **खुशी** मिलती है, तो उनकी **सुंदरता** देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा।
   ऊपर रेखांकित संज्ञाएँ क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे जुड़े शब्दों को हम सिर्फ़ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। नीचे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़ो और समझो। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और कुछ क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखो–

मिठास	भूख	शांति	भोलापन
बुढ़ापा	घबराहट	बहाव	फुर्ती
ताज़गी	क्रोध	मज़दूरी	

3. ● मैं अब इस तरह के उत्तरों की **आदी** हो चुकी हूँ।
   ● उस बगीचे में अमलतास, सेमल, कजरी **आदि** तरह-तरह के पेड़ थे।
   ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न हैं। नीचे ऐसे कुछ और समरूपी शब्द दिए गए हैं। वाक्य बनाकर उनका अर्थ स्पष्ट करो–

अवधि	-	अवधी	ओर	-	और
में	-	मैं	दिन	-	दीन
मेल	-	मैल	सिल	-	सील

सुनना और देखना

1. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित श्रव्य कार्यक्रम 'हेलेन केलर'।
2. सई परांजपे द्वारा निर्देशित फ़ीचर फ़िल्म 'स्पर्श'।

ध्यान देने योग्य शब्द

परखना	-	जाँच करना
सैर	-	भ्रमण
अचरज	-	आश्चर्य
आदी	-	अभ्यस्त
रोचक	-	रुचि बढ़ाने वाला
खुशनसीब	-	भाग्यवान
समाँ	-	वातावरण, माहौल
मुग्ध	-	मोहित
कदर	-	गुणों की पहचान
नियामत	-	ईश्वरीय देन

12. संसार पुस्तक है

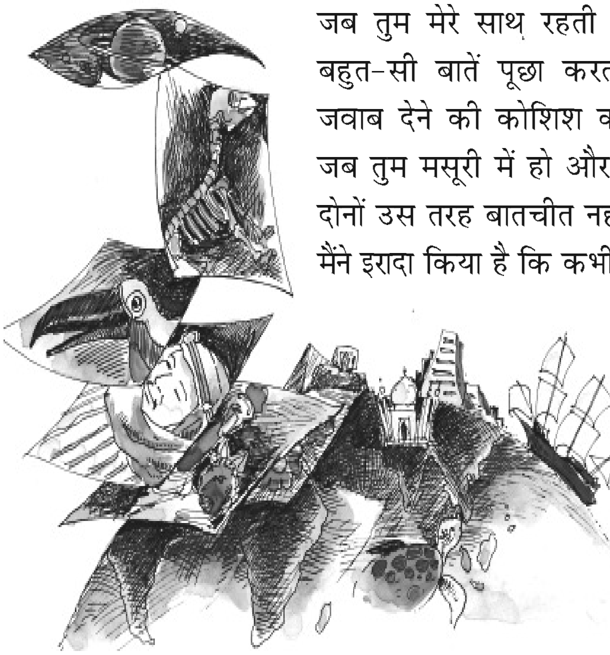

जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अकसर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ। तुमने हिंदुस्तान और इंग्लैंड का कुछ हाल इतिहास में पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, तो तुम्हें सब देशों का और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे-छोटे खतों में बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातों को भी तुम शौक से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी किताबों में पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनंद मिलेगा, उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों करोड़ों वर्ष पुरानी है और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों के पहले सिर्फ़ जानवर थे और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरह के जानवरों और आदमियों से भरी हुई है, उस ज़माने का खयाल करना भी मुश्किल है, जब यहाँ कुछ था। लेकिन विज्ञान जानने वालों और विद्वानों ने, जिन्होंने इस विषय को खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक समय ऐसा था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इस पर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें और पहाड़ों और जानवरों की पुरानी हड्डियों को गौर से देखें तो हमें खुद मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास की किताबों में ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों? यह तो नहीं हो सकता कि हम बैठ-बैठे हर एक बात सोच निकालें। यह बड़े मज़े की बात होती क्योंकि हम जो चीज़ चाहते

सोच लेते, और सुंदर परियों की कहानियाँ गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाए वह ठीक कैसे हो सकती है? लेकिन खुशी की बात है कि उस पुराने ज़माने की लिखी हुई किताबें न होने पर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताब से होतीं। ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की पुरानी हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीज़ें हैं, जिनसे हमें दुनिया का पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े ही दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मज़े की बात है। एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा-सा पृष्ठ हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो।

कोई ज़बान, उर्दू, हिंदी या अंग्रेज़ी, सीखने के लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृति के अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसकी पत्थरों और चट्टानों की किताब से पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा-थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? यह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए? अगर तुम किसी बड़ी चट्टान को तोड़कर

टुकड़े-टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़े की तरह बिलकुल नहीं होता। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान सुनें तो तुम उसी के मुँह से उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन गुज़रे हों, वह भी एक चट्टान का टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़े की तरह, उसमें किनारे और कोने थे, जिसे तुम बड़ी चट्टान से तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेलकर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। इस छोटे-से दरिया से वह बड़े दरिया में पहुँचा। इस बीच वह दरिया के पेंदे में लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गए और वह चिकना और चमकदार हो

गया। इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। किसी वजह से दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते-होते अंत में बालू का एक ज़र्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते।

अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीज़ों से, जो हमारे चारों तरफ़ हैं, हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

❑ *जवाहरलाल नेहरू*

(अंग्रेज़ी से अनुवाद : प्रेमचंद)

प्रश्न-अभ्यास

पत्र से

1. लेखक ने 'प्रकृति के अक्षर' किन्हें कहा है?
2. लाखों-करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती कैसी थी?
3. दुनिया का पुराना हाल किन चीज़ों से जाना जाता है? उनके कुछ नाम लिखो।
4. गोल चमकीला रोड़ा अपनी क्या कहानी बताता है?
5. गोल चमकीले रोड़े को यदि दरिया और आगे ले जाता तो क्या होता? विस्तार से उत्तर लिखो।
6. नेहरू जी ने इस बात का हलका-सा संकेत दिया है कि दुनिया कैसे शुरू हुई होगी। उन्होंने क्या बताया है? पाठ के आधार पर लिखो।

पत्र से आगे

1. लगभग हर जगह दुनिया की शुरुआत को समझाती हुई कहानियाँ प्रचलित हैं। तुम्हारे यहाँ कौन सी कहानी प्रचलित है?
2. तुम्हारी पसंदीदा किताब कौन सी है और क्यों?
3. मसूरी और इलाहाबाद शहर भारत के कौन से प्रदेश/प्रदेशों में हैं?
4. तुम जानते हो कि दो पत्थरों को रगड़कर आदि मानव ने आग की खोज की थी। उस युग में पत्थरों का और क्या-क्या उपयोग होता था?
5. यदि प्रकृति का एक अक्षर किसी पेड़ को मानें, तो क्या उसे पढ़ने के लिए सिर्फ़ आँखों का इस्तेमाल करना होगा?

अनुमान और कल्पना

- मान लो कि डिब्बे में रखा अचार हो। उसका मूल रूप क्या था? यानी अचार किस चीज़ का है? वह कैसे बना होगा? बनाने वाले हाथ बुज़ुर्ग औरत के होंगे या नौजवान आदमी के? फ़ैक्ट्री में बनाया गया होगा, या घर में? घर में डाला गया होगा तो किन-किन चीज़ों को ध्यान में रखा गया होगा? अगर किसी मशहूर दुकान का अचार है, तो उस दुकान से कितना पुराना रिश्ता होगा? किन-किन मौकों पर वह डिब्बा उतारा जाता होगा?

  इसी प्रकार कुछ और चीज़ों के बारे में अनुमान लगाओ और बताओ–

  ताला

  कुरसी

  रज़ाई

कुछ करने को

1. अपने आसपास के किसी पेड़ से कोई हरी पत्ती उठाओ और उसे खिड़की की मुँडेर पर रख दो और देखो कि वह कब-कब, कितने समय में बदलती है?

उनकी बनावट में हर दिन क्या फ़र्क आ रहा है? धूप और छाँव में उसका क्या रंग होता है? पत्ती बनने से लेकर सूखने तक के सफ़र में उसके आकार, रंग, नाड़ियों आदि में क्या बदलाव आया? तालिका बनाकर उसमें यह बदलाव दर्ज करो।

2. पास के शहर में कोई संग्रहालय हो तो वहाँ जाकर पुरानी चीज़ें देखो। अपनी कक्षा में उस पर चर्चा करो।

भाषा की बात

1. 'इस बीच वह दरिया में **लुढ़कता** रहा।' नीचे लिखी क्रियाएँ पढ़ो। क्या इनमें और 'लुढ़कना' में तुम्हें कोई समानता नज़र आती है?

   ढकेलना सरकना खिसकना

   इन चारों क्रियाओं का अंतर समझाने के लिए इनसे वाक्य बनाओ।

2. **चमकीला** रोड़ा– यहाँ रेखांकित विशेषण 'चमक' संज्ञा में 'ईला' प्रत्यय जोड़ने पर बना है। निम्नलिखित शब्दों में यही प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाओ और इनके साथ उपयुक्त संज्ञाएँ लिखो–

   पत्थर .... काँटा ....

   रस .... ज़हर ....

3. 'जब तुम मेरे साथ रहती हो, तो अक्सर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो।' यह वाक्य दो वाक्यों को मिलाकर बना है। इन दोनों वाक्यों को जोड़ने का काम जब - तो (तब) कर रहे हैं, इसलिए इन्हें योजक कहते हैं। योजक के रूप में कभी कोई बदलाव नहीं आता, इसलिए ये अव्यय का एक प्रकार होते हैं। नीचे वाक्यों को जोड़ने वाले कुछ और अव्यय दिए गए हैं। उन्हें रिक्त स्थानों में लिखो। इन शब्दों से तुम भी एक-एक वाक्य बनाओ–

   (क) कृष्णन फ़िल्म देखना चाहता है............मैं मेले में जाना चाहती हूँ।

   (ख) मुनिया ने सपना देखा............वह चंद्रमा पर बैठी है।

(ग) छुट्टियों में हम सब············दुर्गापुर जाएँगे············जालंधर।

(घ) सब्ज़ी कटवा कर रखना············घर आते ही मैं खाना बना लूँ।

(ङ) ············मुझे पता होता कि शमीम बुरा मान जाएगा············मैं यह बात न कहता।

(च) मालती ने तुम्हारी शिकायत नहीं············तारीफ़ ही की थी।

(छ) इस वर्ष फ़सल अच्छी नहीं हुई है············अनाज महँगा है।

(ज) विमल जर्मन सीख रहा है············फ्रेंच।

बल्कि / इसलिए / परंतु / कि / यदि / तो / नकि / या / ताकि

सुनना और देखना

1. एन.सी.ई.आर.टी. की श्रव्य शृंखला 'पिता के पत्र पुत्री के नाम'।
2. एन.सी.ई.आर.टी. का श्रव्य कार्यक्रम 'पत्थर और पानी की कहानी'।

ध्यान देने योग्य शब्द

अकसर	–	प्रायः
दामन	–	पहाड़ के नीचे की ज़मीन
खत	–	पत्र, चिट्ठी
आबाद	–	बसा हुआ
गढ़ना	–	निर्माण करना
शर्त	–	प्रतिज्ञा, वह बात जिसपर किसी बात का होना, किया जाना, कायम रहना निर्भर हो
खुरदरा	–	जिसकी सतह चिकनी न हो
दरिया	–	नदी

13. मैं सबसे छोटी होऊँ

मैं सबसे छोटी होऊँ,
तेरी गोदी में सोऊँ,
तेरा अंचल पकड़-पकड़कर
फिरूँ सदा माँ! तेरे साथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ!
बड़ा बनाकर पहले हमको
तू पीछे छलती है मात!
हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात!
अपने कर से खिला, धुला मुख,
धूल पोंछ, सज्जित कर गात,
थमा खिलौने, नहीं सुनाती
हमें सुखद परियों की बात!
ऐसी बड़ी न होऊँ मैं
तेरा स्नेह न खोऊँ मैं,
तेरे अंचल की छाया में
छिपी रहूँ निस्पृह, निर्भय,
कहूँ – दिखा दे चंद्रोदय!

❑ *सुमित्रानंदन पंत*

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है?
2. कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है?
3. कविता में किसके आँचल की छाया में छिपे रहने की बात कही गई है और क्यों?
4. आशय स्पष्ट करो–

   हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
   साथ नहीं फिरती दिन-रात!

कविता से आगे

1. कविता से पता करके लिखो कि माँ बच्चों के लिए क्या-क्या काम करती है? तुम स्वयं सोचकर यह भी लिखो कि बच्चों को माँ के लिए क्या-क्या करना चाहिए?
2. बच्चों को प्राय: सभी क्षेत्रों में बड़ा होने के लिए कहा जाता है। इस कविता में बालिका सबसे छोटी बनी रहना क्यों चाहती है?

अनुमान और कल्पना

1. इस कविता के अंत में कवि माँ से चंद्रोदय दिखा देने की बात क्यों कर रहा है? अनुमान लगाओ और अपने शिक्षक को सुनाओ।
2. इस कविता को पढ़कर इसमें आए तथ्यों और अपनी कल्पना से एक कहानी लिखकर दोस्तों को दिखाओ।

भाषा की बात

1. 'पकड़-पकड़कर' की तरह नीचे लिखे शब्दों को पूरा करो और उनसे वाक्य भी बनाओ–

छोड़	–	बना	–
फिर	–	खिला	–
पोंछ	–	थमा	–
सुना	–	कह	–
दिखा	–	छिपा	–

2. इन शब्दों के समान अर्थ वाले दो-दो शब्द लिखो–

हाथ	–
सदा	–
मुख	–
माता	–
स्नेह	–

3. कविता में 'दिन-रात' शब्द आया है। तुम भी ऐसे पाँच शब्द सोचकर लिखो जिनमें किसी शब्द का विलोम शब्द भी शामिल हो और उनके वाक्य बनाओ।
4. 'निर्भय' शब्द में 'नि' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाया गया है। तुम भी 'नि' उपसर्ग से पाँच शब्द बनाओ।
5. कविता की किन्हीं चार पंक्तियों को गद्य में लिखो।

ध्यान देने योग्य शब्द

अंचल	–	वस्त्र का छोर, साड़ी, ओढ़नी आदि का वह छोर जो छाती और पेट पर रहता है
गात	–	शरीर
निस्पृह	–	इच्छा रहित
निर्भय	–	निडर

14. लोकगीत

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्योहारों और विशेष अवसरों पर ये गाए जाते हैं। सदा से ये गाए जाते रहे हैं और इनके रचने वाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाए जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो गए हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, दकन, छोटा नागपुर में गोंड-खांड,

ओराँव-मुंडा, भील-संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन नियमों की जकड़ में बँध न सका और निर्द्वंद्व लहराता है। इनके गीत और नाच अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाए और नाचे जाते हैं। बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक-दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशाएँ गूँज उठती हैं।

पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में है। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्ज़ापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के अन्य पूरबी और बिहार के पश्चिमी ज़िलों में गाए जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।

इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोज़मर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं। उनके राग भी साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गाए जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में करीब तीस-चालीस बरसों से 'बिदेसिया' का प्रचार हुआ है। गाने वालों के अनेक समूह इन्हें गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के ज़िलों में विशेषकर बिहार में बिदेसिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं हैं। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल-गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाए जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर एक-दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

एक दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने आल्हा के हैं। अधिकतर ये बुंदेलखंडी में गाए जाते हैं। आरंभ तो इसका चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का अपने महाकाव्य में बखान किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाए जाते हैं। इन्हें गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिए गाते फिरते हैं। इसी की सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य-पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं।

अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। हैं तो ये गीत भी लोकगीत ही, पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे मर्द रचने वालों या गाने वालों की भी कमी नहीं है पर इन गीतों का संबंध विशेषत: स्त्रियों से है। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत मर्दों या जनगीतों से अलग और भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्योहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं बड़े प्राचीनकाल से वे गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रंथों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनंत गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणत: अकेले नहीं गाए जाते, दल बाँधकर गाए जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्योहारों और शुभ अवसरों पर वे

बहुत ही भले लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लसित होकर दल बाँधकर गाती हैं। पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज़ है, जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाए जाते हैं। पर सारे देश के– कश्मीर से कन्या कुमारी-केरल तक और काठियावाड़-गुजरात-राजस्थान से उड़ीसा-आंध्र तक – अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे विशेष विधि से घेरे में घूम-घूमकर औरतें गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती जाती हैं जो बाजे का काम करती हैं। इसमें नाच-गान साथ चलते हैं। वस्तुत: यह नाच ही है। सभी प्रांतों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में रसिया चलता है जिसे दल के दल लोग गाते हैं, स्त्रियाँ विशेष तौर पर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।

❑ ***भगवतशरण उपाध्याय***

प्रश्न-अभ्यास

निबंध से

1. निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गई है? बिंदुओं के रूप में उन्हें लिखो।
2. हमारे यहाँ स्त्रियों के खास गीत कौन-कौन से हैं?
3. निबंध के आधार पर और अपने अनुभव के आधार पर (यदि तुम्हें लोकगीत सुनने के मौके मिले हैं तो) तुम लोकगीतों की कौन-सी विशेषताएँ बता सकते हो?
4. 'पर सारे देश के......अपने-अपने विद्यापति हैं' इस वाक्य का क्या अर्थ है? पाठ पढ़कर मालूम करो और लिखो।

अनुमान और कल्पना

1. क्या लोकगीत और नृत्य सिर्फ़ गाँवों या कबीलों में ही पाए जाते हैं? शहरों के कौन से लोकगीत हो सकते हैं? इस पर विचार कर लिखो।
2. 'जीवन जहाँ इठला-इठला कर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने प्रतीक हैं।' क्या तुम इस बात से सहमत हो? 'बिदेसिया' नामक लोकगीत से कोई कैसे आनंद प्राप्त कर सकता है और वे कौन लोग हो सकते हैं जो इसे गाते-सुनते हैं? इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर अपने शिक्षक को सुनाओ।

कुछ करने को

1. तुम अपने इलाके के कुछ लोकगीत इकट्ठा करो। गाए जाने वाले मौकों के अनुसार उनका वर्गीकरण करो।
2. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या असर पड़ रहा है? अपने आसपास के लोगों से बातचीत करके और अपने अनुभवों के आधार पर एक अनुच्छेद लिखो।

भारत के मानचित्र में

- भारत के नक्शे में पाठ में चर्चित राज्यों के लोकगीत और नृत्य दिखाओ।

भाषा की बात

1. 'लोक' शब्द में कुछ जोड़कर जितने शब्द तुम्हें सूझें, उनकी सूची बनाओ। इन शब्दों को ध्यान से देखो और समझो कि उनमें अर्थ की दृष्टि से क्या समानता है। इन शब्दों से वाक्य भी बनाओ। जैसे–लोककला।

2. 'बारहमासा' गीत में साल के बारह महीनों का वर्णन होता है। नीचे विभिन्न अंकों से जुड़े कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़ो और अनुमान लगाओ कि इनका क्या अर्थ है और वह अर्थ क्यों है। इस सूची में तुम अपने मन से सोचकर भी कुछ शब्द जोड़ सकते हो –

इकतारा	सरपंच	चारपाई	सप्तर्षि	अठन्नी
तिराहा	दोपहर	छमाही	नवरात्र	

3. **को**, **में**, **से** आदि वाक्य में संज्ञा का दूसरे शब्दों के साथ संबंध दर्शाते हैं। पिछले पाठ (झाँसी की रानी) में तुमने **का** के बारे में जाना। नीचे 'मंजरी जोशी' की पुस्तक 'भारतीय संगीत की परंपरा' से भारत के एक लोकवाद्य का वर्णन दिया गया है। इसे पढ़ो और रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो–
तुरही भारत के कई प्रांतों में प्रचलित है। यह दिखने········अंग्रेज़ी के एस या सी अक्षर········तरह होती है। भारत········विभिन्न प्रांतों में पीतल या काँसे········बना यह वाद्य अलग-अलग नामों········जाना जाता है। धातु की नली········घुमाकर एस········आकार इस तरह दिया जाता है कि उसका एक सिरा संकरा रहे और दूसरा सिरा घंटीनुमा चौड़ा रहे। फूँक मारने········एक छोटी नली अलग········जोड़ी जाती है। राजस्थान········इसे बर्गू कहते हैं। उत्तर प्रदेश········यह तूरी मध्य प्रदेश और गुजरात········रणसिंघा और हिमाचल प्रदेश········नरसिंघा········नाम से जानी जाती है। राजस्थान और गुजरात में इसे काकड़सिंघी भी कहते हैं।

ध्यान देने योग्य शब्द

लोच	-	लचीलापन, लचक
झाँझ	-	काँसे की दो तश्तरियों से बना हुआ वाद्य-यंत्र
करताल	-	एक प्रकार का वाद्य-यंत्र

हेय	-	हीन, तुच्छ
ओजस्वी	-	ओज भरा, प्रभावकारी
सिरजती	-	बनाती, सृजन करती
आह्लादकर	-	हर्षकर
कृत्रिम	-	बनावटी
अबूझ	-	जो समझने योग्य न हो, क्लिष्ट
बखान	-	वर्णन, बड़ाई, गुण-कथन
उल्लसित	-	खुश
उद्दाम	-	बंधन रहित, बहुत ज़्यादा

15. नौकर

आश्रम में गांधी कई ऐसे काम भी करते थे जिन्हें आमतौर पर नौकर-चाकर करते हैं। जिस ज़माने में वे बैरिस्टरी से हज़ारों रुपये कमाते थे, उस समय भी वे प्रतिदिन सुबह अपने हाथ से चक्की पर आटा पीसा करते थे। चक्की चलाने में कस्तूरबा और उनके लड़के भी हाथ बँटाते थे। इस प्रकार घर में रोटी बनाने के लिए महीन या मोटा आटा वे खुद पीस लेते थे। साबरमती आश्रम में भी गांधी ने पिसाई का काम जारी रखा। वह चक्की को ठीक करने में कभी-कभी घंटों मेहनत करते थे। एक बार एक कार्यकर्ता ने कहा कि आश्रम में आटा कम पड़ गया है। आटा पिसवाने में हाथ बँटाने के लिए

गांधी फौरन उठकर खड़े हो गए। गेहूँ पीसने से पहले उसे बीनकर साफ़ करने पर वह ज़ोर देते थे। कौपीनधारी इस महान व्यक्ति को अनाज बीनते देखकर उनसे मिलने वाले लोग हैरत में पड़ जाते थे। बाहरी लोगों के सामने शारीरिक मेहनत का काम करते गांधी को शर्म नहीं लगती थी। एक बार उनके पास कॉलेज के कोई छात्र मिलने आए। उनको अंग्रेज़ी भाषा के अपने ज्ञान का बड़ा गर्व था। गांधी से बातचीत के अंत में वे बोले, ''बापू, यदि मैं आपकी कोई सेवा कर सकूँ तो कृपया मुझे अवश्य बताएँ।'' उन्हें आशा थी कि बापू उन्हें कुछ लिखने-पढ़ने का काम देंगे। गांधी ने उनके मन की बात ताड़ ली और बोले, ''अगर आपके पास समय हो, तो इस थाली के गेहूँ बीन डालिए।'' आगंतुक बड़ी मुश्किल में पड़ गए, लेकिन अब तो कोई चारा नहीं था। एक घंटे तक गेहूँ बीनने के बाद वह थक गए और गांधी से विदा माँग कर चल दिए।

कुछ वर्षों तक गांधी ने आश्रम के भंडार का काम संभालने में मदद दी। सवेरे की प्रार्थना के बाद वे रसोईघर में जाकर सब्ज़ियाँ छीलते थे। रसोईघर या भंडारे में अगर वे कहीं गंदगी या मकड़ी का जाला देख पाते थे तो अपने साथियों को आड़े हाथों लेते। उन्हें सब्ज़ी, फल और अनाज के पौष्टिक गुणों का ज्ञान था। एक बार एक आश्रमवासी ने बिना धोए आलू काट दिए। गांधी ने उसे समझाया कि आलू और नींबू को बिना धोए नहीं काटना चाहिए। एक बार एक आश्रमवासी को कुछ ऐसे केले दिए गए जिसके छिलके पर काले चक्ते पड़ गए थे। उसने बहुत बुरा माना। तब गांधी ने उसे समझाया कि ये जल्दी पच जाते हैं और तुम्हें खासतौर पर इसलिए दिए गए

हैं कि तुम्हारा हाज़मा कमज़ोर है। गांधी आश्रमवासियों को अकसर स्वयं ही भोजन परोसते थे। इस कारण वे बेचारे बेस्वाद उबली हुई चीज़ों के विरुद्ध कुछ कह भी नहीं पाते थे। दक्षिण अफ़्रीका की एक जेल में वे सैकड़ों कैदियों को दिन में दो बार भोजन परोसने का कार्य कर भी चुके थे।

आश्रम का एक नियम यह था कि सब लोग अपने बरतन खुद साफ़ करें। रसोई के बरतन बारी-बारी से कुछ लोग दल बाँध कर धोते थे। एक दिन गांधी ने बड़े-बड़े पतीलों को खुद साफ़ करने का काम अपने ऊपर लिया। इन पतीलों की पेंदी में खूब कालिख लगी थी। राख भरे हाथों से वह एक पतीले को खूब ज़ोर-ज़ोर से रगड़ने में लगे हुए थे कि तभी कस्तूरबा वहाँ आ गईं। उन्होंने पतीले को पकड़ लिया और बोलीं, ''यह काम आपका नहीं है। इसे करने को और बहुत से लोग हैं।'' गांधी को लगा कि उनकी बात मान लेने में ही बुद्धिमानी है और वे चुपचाप कस्तूरबा को उन बरतनों की सफ़ाई सौंप कर चले आए। बरतन एकदम चमकते न हों, तब तक गांधी को संतोष नहीं होता था। एक बार जेल में उनको जो मददगार दिया गया था उसके काम से असंतुष्ट होकर उन्होंने बताया था कि वे खुद कैसे लोहे के बरतनों को भी माँज कर चाँदी-सा चमका सकते थे।

जब आश्रम का निर्माण हो रहा था उस समय वहाँ आने वाले कुछ मेहमानों को तंबुओं में सोना पड़ता था। एक नवागत को पता नहीं था कि अपना बिस्तर कहाँ रखना चाहिए, इसलिए उसने बिस्तर को लपेटकर रख दिया और यह पता लगाने गया कि उसे कहाँ रखना है। लौटते समय उसने देखा कि गांधी खुद उसका बिस्तर कंधे पर उठाए रखने चले जा रहे हैं।

आश्रम के लिए बाहर बने कुएँ से पानी खींचने का काम भी वे रोज़ करते थे। एक दिन गांधी कुछ अस्वस्थ थे और चक्की पर आटा पीसने के काम में हिस्सा बँटा चुके थे। उनके एक साथी ने उन्हें थकावट से बचाने के लिए अन्य आश्रमवासियों की सहायता से सभी बड़े-छोटे बरतनों में

पानी भर डाला। गांधी को यह बात पसंद नहीं आई, मन में कुछ ठेस भी लगी। उन्होंने बच्चों का नहाने का एक टब उठा लिया और कुएँ से उसमें पानी भरकर टब को सिर पर उठाकर आश्रम में ले आए। बेचारे कार्यकर्ता को बहुत पछतावा हुआ।

शरीर से जब तक बिलकुल लाचारी न हो तब तक गांधी को यह बात बिलकुल पसंद नहीं थी कि महात्मा या बूढ़े होने के कारण उनको अपने हिस्से का दैनिक शारीरिक श्रम न करना पड़े। हर प्रकार का काम करने की उनमें अद्‌भुत क्षमता और शक्ति थी। वह थकान का नाम भी नहीं जानते थे। दक्षिण अफ्रीका में बोअर-युद्ध के दौरान उन्होंने घायलों को स्ट्रेचर पर

लाद कर एक-एक दिन में पच्चीस-पच्चीस मील तक ढोया था। वह मीलों पैदल चल सकते थे। दक्षिण अफ्रीका में जब वे टाल्स्टॉय बाड़ी में रहते थे, तब पास के शहर में कोई काम होने पर दिन में अकसर बयालीस मील तक पैदल चलते थे। इसके लिए वे घर में बना कुछ नाश्ता साथ लेकर सुबह दो बजे ही निकल पड़ते थे, शहर में खरीददारी करते और शाम होते-होते वापस फार्म पर लौट आते थे। उनके अन्य साथी भी उनके इस उदाहरण का खुशी-खुशी अनुकरण करते थे।

एक बार किसी तालाब की भराई का काम चल रहा था, जिसमें गांधी के साथी लगे हुए थे। एक सुबह काम खत्म करके वे लोग फावड़े, कुदाल और टोकरियाँ लिए जब वापस लौटे तो देखते हैं कि गांधी ने उनके लिए तश्तरियों में नाश्ते के लिए फल आदि तैयार करके रखे हैं। एक साथी ने पूछा, ''आपने हम लोगों के लिए यह सब कष्ट क्यों किया? क्या यह उचित है कि हम आपसे सेवा कराएँ?'' गांधी ने मुसकराकर उत्तर दिया, ''क्यों नहीं। मैं जानता था कि तुम लोग थके-माँदे लौटोगे। तुम्हारा नाश्ता तैयार करने के लिए मेरे पास खाली समय था।''

दक्षिण अफ़्रीका में रहने वाले भारतीयों के जाने-माने नेता के रूप में गांधी भारतीय प्रवासियों की माँगों को ब्रिटिश सरकार के सामने रखने के लिए एक बार लंदन गए। वहाँ उन्हें भारतीय छात्रों ने एक शाकाहारी भोज में निमंत्रित किया। छात्रों ने इस अवसर के लिए स्वयं ही शाकाहारी भोजन तैयार करने का निश्चय किया था। तीसरे पहर दो बजे एक दुबला-पतला और छरहरा आदमी आकर उनमें शामिल हो गया और तश्तरियाँ धोने, सब्ज़ी साफ़ करने और अन्य छुट-पुट काम करने में उनकी मदद करने लगा। बाद में छात्रों का नेता वहाँ आया तो क्या देखता है कि वह दुबला-पतला आदमी और कोई नहीं, उस शाम को भोज में निमंत्रित उनके सम्मानित अतिथि गांधी थे।

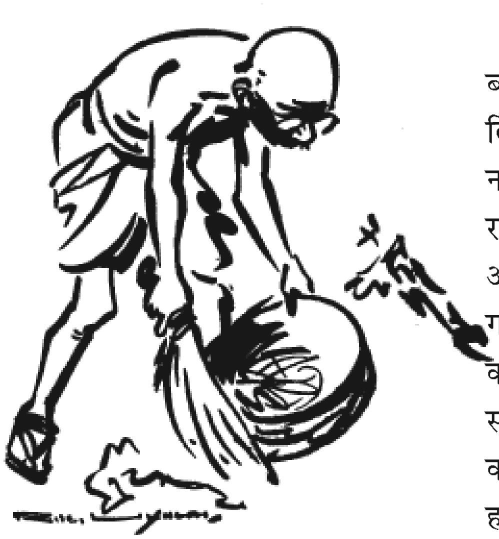

गांधी दूसरों से काम लेने में बहुत सख्त थे, लेकिन अपने लिए दूसरों से काम कराना उन्हें नापसंद था। एक बार एक राजनीतिक सम्मेलन से गांधी जब अपने डेरे पर लौटे तो रात हो गई थी। सोने से पहले वे अपने कमरे का फर्श बुहार रहे थे। उस समय रात के दस बजे थे। एक कार्यकर्ता ने दौड़कर गांधी के हाथ से बुहारी ले ली।

जब गांधी गाँवों का दौरा कर रहे होते, उस समय रात को यदि लिखते समय लालटेन का तेल खत्म हो जाता तो वे चंद्रमा की रोशनी में ही पत्र पूरा कर लेना ज़्यादा पसंद करते थे, लेकिन सोते हुए अपने किसी थके हुए साथी को नहीं जगाते थे। नौआखाली पद-यात्रा के समय गांधी ने अपने शिविर में केवल दो आदमियों को ही रहने की अनुमति दी। इन दोनों को यह नहीं मालूम था कि खाखरा कैसे बनाया जाता है। इस पर गांधी स्वयं रसोई में जा बैठे और निपुण रसोइए की तरह उन्होंने खाखरा बनाने की विधि बताई। उस समय गांधी की अवस्था अठहत्तर वर्ष की थी।

गांधी को बच्चों से बहुत प्रेम था। अपने बच्चों के जन्म के दो माह बाद उन्होंने कभी किसी दाई को बच्चे की देखभाल के लिए नहीं रखा। वे मानते थे कि बच्चे के विकास के लिए माँ-बाप का प्यार और उनकी देखभाल अनिवार्य है।

वे माँ की तरह बच्चों की देखभाल कर सकते थे, खिला-पिला और बहला सकते थे। एक बार दक्षिण अफ्रीका में जेल से छूटने के बाद घर लौटने पर उन्होंने देखा कि उनके मित्र की पत्नी श्रीमती पोलक बहुत ही दुबली और कमज़ोर हो गई हैं। उनका बच्चा उनका दूध पीना छोड़ता नहीं था और वह उसका दूध छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। बच्चा उन्हें चैन नहीं लेने देता था और रो-रोकर उन्हें जगाए रखता था। गांधी जिस दिन लौटे, उसी रात से उन्होंने बच्चे की देखभाल का काम अपने हाथों में ले लिया। सारे दिन बड़ी मेहनत करने, सभाओं में भाषण देने के बाद, चार मील पैदल चलकर गांधी कभी-कभी रात को एक बजे घर पहुँचते थे, और बच्चे को

श्रीमती पोलक के बिस्तर पर से उठाकर अपने बिस्तर पर लिटा लेते थे। वह चारपाई के पास एक बरतन में पानी भरकर रख लेते ताकि यदि बच्चे को प्यास लगे तो उसे पिला दें, लेकिन इसकी ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। बच्चा कभी नहीं रोता और उनकी चारपाई पर रात में आराम से सोता रहता था। एक पखवाड़े तक माँ से अलग सुलाने के बाद, बच्चे ने माँ का दूध छोड़ दिया।

गांधी अपने से बड़ों का बड़ा आदर करते थे। दक्षिण अफ्रीका में गोखले, गांधी के साथ ठहरे हुए थे। उस समय गांधी ने उनके दुपट्टे पर इस्त्री की। वह उनका बिस्तर ठीक करते थे, उनको भोजन परोसते थे और उनके पैर दबाने को भी तैयार रहते थे। गोखले बहुत मना करते थे लेकिन गांधी नहीं मानते थे। महात्मा कहलाने से बहुत पहले एक बार दक्षिण अफ्रीका से भारत आने पर गांधी कांग्रेस के अधिवेशन में गए। वहाँ उन्होंने गंदे पाखाने साफ़ किए और बाद में उन्होंने एक बड़े कांग्रेसी नेता से पूछा, ''मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?'' नेता ने कहा ''मेरे पास बहुत से

पत्र इकट्ठे हो गए हैं जिनका जवाब देना है। मेरे पास कोई कारकुन नहीं है जिसे यह काम दूँ। क्या तुम यह काम करने को तैयार हो?'' गांधी ने कहा, ''ज़रूर, मैं ऐसा कोई भी काम करने को तैयार हूँ जो मेरी सामर्थ्य से बाहर न हो।'' यह काम उन्होंने थोड़े ही समय में समाप्त कर डाला और इसके बाद उन्होंने उन नेता की कमीज़ के बटन आदि लगाने और उनकी अन्य सेवा का काम खुशी से किया।

जब कभी आश्रम में किसी सहायक को रखने की आवश्यकता होती थी, तब गांधी किसी हरिजन को रखने का आग्रह करते थे। उनका कहना था, ''नौकरों को हमें वेतनभोगी मज़दूर नहीं, अपने भाई के समान मानना चाहिए। इसमें कुछ कठिनाई हो सकती है, कुछ चोरियाँ हो सकती हैं, फिर भी हमारी कोशिश सर्वथा निष्फल नहीं जाएगी।''

उन्हें यह मालूम ही न था कि किसी को नौकर की भाँति कैसे रखें। एक बार भारत की जेल में, उनके कई साथी कैदियों को उनकी सेवा-टहल का काम सौंपा गया। एक आदमी उनके फल धोता या काटता, दूसरा बकरियों को दुहता, तीसरा उनके निजी नौकर की तरह काम करता और चौथा उनके पाखाने की सफ़ाई करता था। एक ब्राह्मण कैदी उनके बरतन धोता था और दो गोरे यूरोपियन प्रतिदिन उनकी चारपाई बाहर निकालते थे।

गांधी ने देखा कि इंग्लैंड में ऊँचे घरानों में घरेलू नौकरों को परिवार का आदमी माना जाता था। एक बार एक अंग्रेज़ के घर से विदा लेते समय उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि घरेलू नौकरों का उनसे परिचय नौकरों की तरह नहीं बल्कि परिवार के सदस्य के समान कराया गया।

एक बार एक भारतीय सज्जन के यहाँ काफ़ी दिनों तक ठहरने के बाद गांधी जब चलने लगे तब उस घर के नौकरों से उन्होंने विदा ली और कहा, ''मैं कभी किसी को अपना नौकर नहीं समझता, उसे भाई या बहन ही माना है और आप लोगों को भी मैं अपना भाई समझता हूँ। आपने मेरी जो सेवा की उसका प्रतिदान देने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है, लेकिन ईश्वर आपको इसका पूरा फल देंगे।''

❑ ***अनु बंद्योपाध्याय***

प्रश्न-अभ्यास

निबंध से

1. आश्रम में कॉलेज के छात्रों से गांधी जी ने कौन-सा काम करवाया और क्यों?
2. 'आश्रम में गांधी जी कई ऐसे काम भी करते थे, जिन्हें आमतौर पर नौकर-चाकर करते हैं'। पाठ से तीन अलग-अलग प्रसंग अपने शब्दों में लिखो जो इस बात का प्रमाण हों।
3. लंदन में भोज पर बुलाए जाने पर गांधी जी ने क्या किया?
4. गांधी जी ने श्रीमती पोलक के बच्चे का दूध कैसे छुड़वाया?
5. आश्रम में काम करने या करवाने का कौन-सा तरीका गांधी जी अपनाते थे? इसे पाठ पढ़कर लिखो।

निबंध से आगे

1. गांधी जी इतना पैदल क्यों चलते थे? पैदल चलने के क्या लाभ हैं? लिखो।
2. अपने घर के किन्हीं दस कामों की सूची बनाकर लिखो कि ये काम घर के कौन से सदस्य अकसर करते हैं? तुम अगले पृष्ठ पर बनी तालिका की सहायता ले सकते हो –

काम	मैं	माँ	पिता	भाई	बहन	चाचा	दादी	अन्य
1. घर का सामान लाना								
2. घर की सफ़ाई करना								
3. बिस्तर रखना								
4. खाना बनाना								
5. कपड़े धोना								

अब यह देखो कि कौन सबसे ज़्यादा काम करता है और कौन सबसे कम। कामों का बराबर बँटवारा हो सके, इसके लिए तुम क्या कर सकते हो? सोच कर शिक्षक को बताओ।

अनुमान और कल्पना

1. गांधी जी अपने साथियों की ज़रूरत के मुताबिक हर काम कर देते थे, लेकिन उनका खुद का काम कोई और करे, ये उन्हें पसंद नहीं था। क्यों? सोचो और अपने शिक्षक को सुनाओ।
2. 'नौकरों को हमें वेतनभोगी मज़दूर नहीं, अपने भाई के समान मानना चाहिए। इसमें कुछ कठिनाई हो सकती है, फिर भी हमारी कोशिश सर्वथा निष्फल नहीं जाएगी।' गांधी जी की इस बात को अपने मित्रों को समझाओ।
3. गांधी जी की कही-लिखी बातें लगभग सौ से अधिक किताबों में दर्ज हैं। घर के काम, बीमारों की सेवा, मेहमानों से बातचीत आदि ढेरों काम करने के बाद गांधी जी को लिखने का समय कब मिलता होगा? गांधी जी का एक दिन कैसे गुज़रता होगा, इस पर अपनी कल्पना से लिखो।

4. पाठ में बताया गया है कि गांधी जी और उनके साथी आश्रम में रहते थे। आश्रम किसे कहते हैं? स्कूल के छात्रावास से गांधी जी का आश्रम किस तरह अलग था? पता करो और अपने शिक्षक को सुनाओ।
5. ऐसे कामों की सूची बनाओ जिसे तुम हर रोज़ खुद कर सकते हो पर नहीं करते? सामने उनका नाम लिखो जो यह काम तुम्हारे लिए करते हैं।

भाषा की बात

1.(क) 'पिसाई' संज्ञा है, जो 'पीस' क्रिया के अंत में 'ई' प्रत्यय जोड़ने से बनी है। किसी शब्द के अंत में कुछ जोड़ा जाए, तो उसे प्रत्यय कहते हैं। नीचे ऐसी कुछ और संज्ञाएँ लिखी हैं। बताओ कि ये किन क्रियाओं से बनी हैं–

बुआई	कटाई ....
सिंचाई	रोपाई ....
कताई	रंगाई ....

(ख) हर काम-धंधे और हर क्षेत्र की अपनी अलग भाषा और शब्द-भंडार होता है। ऊपर लिखे शब्दों का संबंध दो अलग-अलग कामों से है। पहचानो कि वे क्षेत्र कौन-से हैं।

2. हमारे आसपास ऐसे कई घरेलू काम हैं, जिन्हें अब कम महत्व दिया जाता है। कपड़े सिलना इनमें से एक है। नीचे इस काम से जुड़े कुछ शब्द दिए गए हैं। आसपास के बड़ों से या दर्ज़ी से पूछो और प्रत्येक शब्द को एक-दो वाक्यों में समझाओ। इस सूची में और शब्द भी जोड़ो–

तुरपाई	कच्ची सिलाई
बखिया	चोर सिलाई

3. नीचे लिखे गए शब्द पाठ से लिए गए हैं। इन्हें पाठ में खोज कर बताओ कि ये स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिग–

कालिख	भराई	चक्की	रोशनी
जेल	सेवा	पतीला	

पाठ के वाक्यों की सहायता से यह भी बताओ कि तुमने यह कैसे जाना? इसे अपने शिक्षक को सुनाओ।

ध्यान देने योग्य शब्द

बैरिस्टरी	-	वकालत
फ़ौरन	-	तुरंत
कौपीनधारी	-	धोती पहनने के एक विशेष ढंग के कारण यह विशेषण गांधी जी के लिए प्रयोग में लाया जाता था, लँगोटी धारण करने वाला
बीनना	-	चुनना, छाँटना
हैरत	-	अचंभा, विस्मय
आगंतुक	-	आनेवाला
चारा	-	उपाय
विदा माँगना	-	जाने के लिए अनुमति माँगना
हाज़मा	-	पाचन शक्ति
माँजना	-	रगड़कर साफ़ करना, चमकाना
अद्‌भुत	-	अनोखा, आश्चर्यजनक
अनुकरण	-	नकल, किसी की देखा-देखी करना
तश्तरी	-	थालीनुमा प्लेट

छरहरा - चुस्त, फुर्तीला
सख्त - कठोर, प्रचंड, दुष्कर
बुहारी - बुहारने वाली चीज़, झाड़ू
शिविर - अस्थायी विश्राम स्थल
खाखरा - एक गुजराती व्यंजन
चैन - आराम
पखवाड़ा - पंद्रह दिन का समय, महीने का आधा भाग
कारकुन - कारिंदा, काम करने वाला
निष्फल - जिसका कोई फल न हो।
प्रतिदान - किसी ली हुई वस्तु के बदले दूसरी वस्तु देना।

16. वन के मार्ग में

सवैया

पुर तें निकसी रघुबीर-बधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं, "चलनो अब केतिक, पर्न कुटी करिहौ कित ह्वै?"।
तिय की लखि आतुरता पिय की, अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।

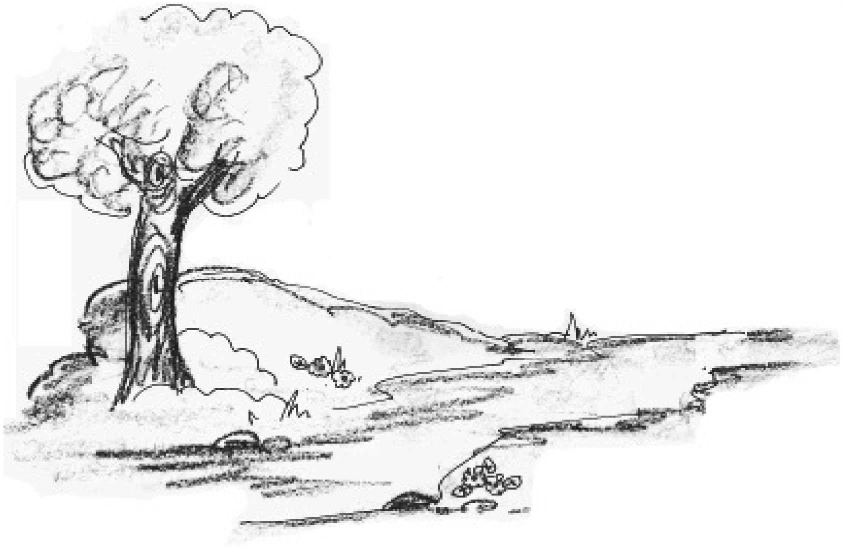

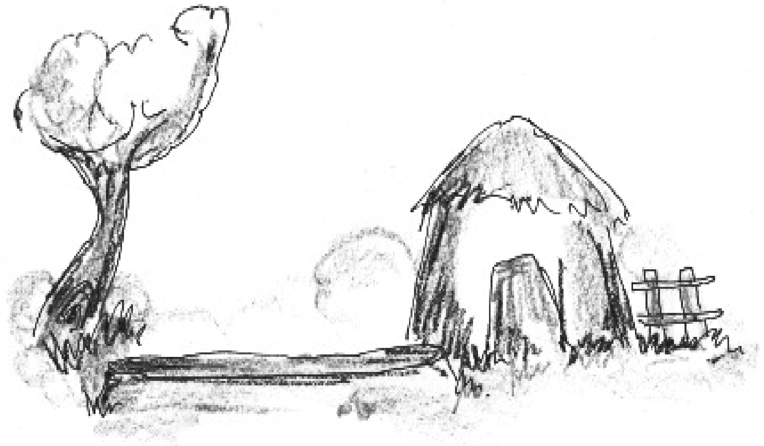

‘‘जल को गए लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े।।”
तुलसी रघुबीर प्रिया स्रम जानि कै बैठि बिलंब लौ कंटक काढ़े।
जानकी नाह को नेह लख्यौ, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े।।

❑ *तुलसीदास*

(कवितावली – अयोध्या कांड से)

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. प्रथम सवैया में कवि ने राम-सीता के किस प्रसंग का वर्णन किया है?
2. वन के मार्ग में सीता को होने वाली कठिनाइयों के बारे में लिखो।
3. सीता की आतुरता देखकर राम की क्या प्रतिक्रिया होती है?
4. राम बैठकर देर तक काँटे क्यों निकालते रहे?
5. सवैया के आधार पर बताओ कि दो कदम चलने के बाद सीता का ऐसा हाल क्यों हुआ?
6. 'धरि धीर दए' का आशय क्या है?

अनुमान और कल्पना

- अपनी कल्पना से वन के मार्ग का वर्णन करो।

भाषा की बात

- लखि – देखकर   धरि – रखकर
  पोंछि – पोंछकर   जानि – जानकर

  ऊपर लिखे शब्दों और उनके अर्थ को ध्यान से देखो। हिंदी में जिस उद्देश्य के लिए हम क्रिया में 'कर' जोड़ते हैं, उसी के लिए अवधी में क्रिया में ि (इ) को जोड़ा जाता है, जैसे अवधी में बैठ + ि = बैठि और हिंदी में बैठ + कर = बैठकर। तुम्हारी भाषा या बोली में क्या होता है? अपनी भाषा के ऐसे छह शब्द लिखो। उन्हें ध्यान से देखो और कक्षा में बताओ।

ध्यान देने योग्य शब्द

पुर	-	नगर, किला
निकसी	-	निकली
बधू	-	बहू
धरि	-	धारण करके
धीर	-	धैर्य, धीरज
दए	-	रखना, धरना
मग	-	रास्ता
डग	-	कदम
द्वै	-	दो
झलकीं	-	दिखाई दी
भाल	-	ललाट
कनी	-	बूँदें
पुट	-	होंठ
बूझति	-	पूछती है
केतिक	-	कितना
पर्न कुटी	-	पत्तों की बनी छाजन वाली कुटिया
कित	-	कहाँ
तिय	-	पत्नी
आतुरता	-	व्याकुलता
चारु	-	सुंदर
लरिका	-	लड़का

परिखौ	-	प्रतीक्षा करना
छाँह	-	छाँव, छाया
ठाढ़े	-	खड़ा होना
पसेउ	-	पसीना
भूभुरि	-	गरम रेत
विलंब	-	देर
कंटक	-	काँटा
काढ़ना	-	निकालना
बिलोचन	-	नेत्र

17. पेपरमेशी

कागज़ से तरह-तरह की आकृतियाँ, खिलौने, सजावट के लिए झालर, झंडियाँ आदि तो तुमने खूब बनाई होंगी, पर कभी मूर्ति बनाई है कागज़ से? हाँ भई, कागज़ से भी मूर्ति बनाई जा सकती है। इस कला को अंग्रेज़ी में पेपरमेशी कहा जाता है।

कागज़ से मूर्ति बनाने की चार विधियाँ हैं। इन विधियों के बारे में कुछ मूल बातें यहाँ दे रहे हैं।

कागज़ को भिगोकर

सबसे पहले यह तय करो कि तुम क्या बनाना चाहते हो क्योंकि जो भी बनाना चाहोगे उसके साँचे की ज़रूरत पड़ेगी।

पुराने अखबार या रद्दी कापी-किताबों को टुकड़े-टुकड़े करके पानी में भिगो दो। कागज़ को डेढ़-दो घंटे भीगने दो। जब कागज़ अच्छी तरह भीग जाए तो एक-एक टुकड़ा लेकर साँचे पर चिपकाते जाओ। जब पूरे साँचे पर एक तह जम जाए तो उसके ऊपर पाँच-छह तह गोंद की मदद से चिपकाकर बनाओ। अब इसे सूखने के लिए रख दो। सूख जाने पर सावधानी से धीरे-धीरे साँचे पर कागज़ से बनी रचना को अलग करो।

तुम्हारी मूर्ति तैयार है। यह वज़न में हलकी भी होगी और गिरने पर टूटने का डर भी नहीं रहेगा। इसे तुम मन चाहे रंगों से रंग भी सकते हो।

इस विधि से तुम मुखौटे भी बना सकते हो। और हाँ, मुखौटे के लिए तो साँचे की भी आवश्यकता नहीं। बस अपने चेहरे के नाप का तसला या

बड़ा कटोरा (या अन्य कोई बरतन) चाहिए। इस पर ऊपर बताए तरीके से ही गीले कागज़ की पाँच-छह तह चिपकाओ और सूखने के लिए छोड़ दो। जब अच्छी तरह सूख जाए तो इसे मुँह पर लगाकर अनुमान से आँख और नाक के निशान बना लो। आँखों की जगह दो छेद बनाओ। नाक की जगह पर भी छेद बना सकते हो, ताकि तुम्हारी नाक बाहर निकल आए। चाहो तो मुखौटे में कागज़ की नाक भी बना सकते हो। जब कागज़ की तीन-चार तह बन जाए तो एक सूखे कागज़ को हाथ से दबाकर, मुट्ठी में भींचकर गोला-सा बना लो। इस गोले को दबाकर ऊपर से संकरा और नीचे से थोड़ा चौड़ा नाक जैसा आकार दे दो। अब इसे गोंद लगाकर मुखौटे पर नाक की जगह चिपका दो।

मुखौटे पर रंग करके उसे सुंदर बना सकते हो। रंग की मदद से ही आँख की भौहें, मुँह, मूँछ आदि भी बना लो। भुट्टे के बाल, जूट आदि लगाकर भी दाढ़ी, मूँछ या भौहें बनाई जा सकती हैं!

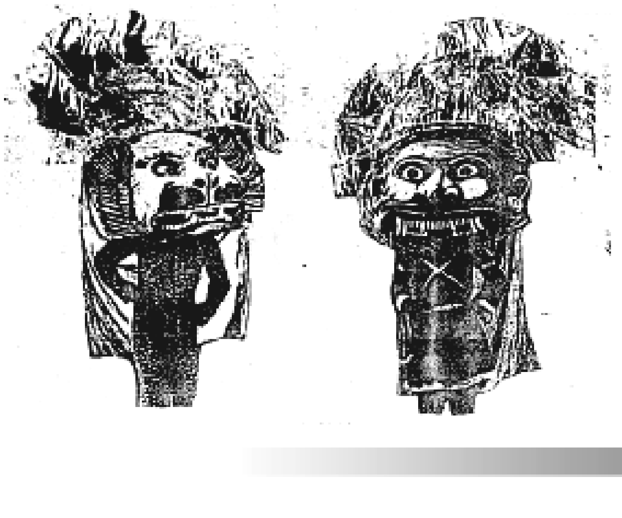

कागज़ की लुगदी बनाकर

कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े किसी पुराने मटके या अन्य बरतन में पानी भरकर भिगो दो। इन्हें दो-तीन दिन तक गलने दो। जब कागज़ अच्छी तरह गल जाए तो उसे पत्थर पर कूटकर एक-सा बना लो। अब इस पर गोंद या पिसी हुई मेथी का गाढ़ा घोल डालकर अच्छी तरह मिला लो। इस तरह कागज़ की लुगदी तैयार हो जाएगी। इस लुगदी से मनचाही मूर्ति बना सकते हो। गाँवों में इस विधि से डलिया आदि बनाई जाती हैं। शायद तुमने भी बनाई हो। पर इस तरह की लुगदी से सुघढ़ तथा जटिल डिज़ाइन वाली मूर्तियाँ या वस्तुएँ नहीं बनाई जा सकतीं।

लुगदी में खड़िया (चॉक पाउडर) मिलाकर

अगर खड़िया मिलाकर बनाना है तो एक किलो कागज़ की लुगदी में एक पाव गोंद, पाँच किलो खड़िया चाहिए। कागज़ को पानी में भिगोकर लुगदी बना लो। अगर पानी ज़्यादा लगे तो हाथ से दबाकर निकाल दो। अब इसमें खड़िया मिलाते हुए आटे जैसा माड़ते जाओ। बीच में गोंद भी मिला लो। जब तीनों चीज़ें अच्छी तरह मिल जाएँ तो मूर्ति के लिए लुगदी तैयार है।

अब इससे तुम जैसी चाहो, वैसी मूर्ति बना सकते हो। साँचे से भी और बिना साँचे के भी। बनने वाली मूर्तियाँ खड़िया के कारण सफ़ेद होंगी। रंग करके मूर्ति को सुंदर बना सकते हो। बाज़ार में बिकने वाले बहुत से खिलौने इसी विधि से बनते हैं।

लुगदी में मिट्टी मिलाकर

इस विधि में एक किलो कागज़ के लिए एक पाव गोंद तथा दस किलो मिट्टी की आवश्यकता होगी। कागज़ गल जाने पर लुगदी तैयार करते समय उसमें साफ़ छनी महीन मिट्टी मिलाते जाओ और आटे जैसा गूँथकर एक-सा करते जाओ। गोंद भी इसी बीच मिला दो।

मिट्टी की मूर्तिकला के समान कागज़ की कला 'पेपरमेशी' पुरानी नहीं है।

अट्ठारहवीं शताब्दी में इस माध्यम में यूरोप में बहुत काम हुआ। सुंदर डिज़ाइनों वाले डिब्बे, छोटी-छोटी सजावट की चीज़ें आदि बनाई गईं। दरवाज़ों और चौखटों पर सुंदर बेलबूटे भी इससे बनाए जाते थे।

सन् 1850 के आसपास बड़े-बड़े भवनों के अंदर की सजावट के लिए भी पेपरमेशी का खूब उपयोग हुआ। इससे मुखौटे, गुड़ियों के चेहरे, चित्र के चारों तरफ़ लगने वाले नक्काशीदार फ्रेम, ब्लॉक आदि भी बनाए जाते थे।

अपने यहाँ भी पेपरमेशी में मूर्तियाँ, डिब्बे इत्यादि खूब बनाए जाते हैं। बिहार में मानव आकार जितनी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ भी बनाई जाती हैं और उन्हें वहाँ की प्रसिद्ध चित्र शैली मधुबनी के समान रंगा भी जाता है। बिहार में इस तरह की मूर्तियाँ बनाने वालों में सुभद्रादेवी का नाम प्रसिद्ध है। कश्मीर में पेपरमेशी से डिब्बे बनाने का काम बहुत सुंदर होता है। उनके ऊपर बेलबूटों के सुंदर डिज़ाइन भी बनाए जाते हैं।

अलग-अलग प्रदेशों में लोकनृत्यों और लोककलाओं में कागज़ के बने मुखौटों का खूब उपयोग किया जाता है।

लुगदी देखने में मिट्टी की तरह दिखेगी, पर हलकी होगी। इससे तुम साँचे या बिना साँचे के उपयोग के मूर्तियाँ बना सकते हो।

साँचे से बनाने के लिए अंदाज़ से आवश्यक लुगदी लो। उसकी गोल लोई बना लो। अब फ़र्श पर थोड़ी सूखी मिट्टी परथन की तरह फैला दो। इस पर लोई को रखकर हाथ या बेलन से साँचे के आकार में बड़ा करते जाओ। पर उसकी मोटाई बाजरा या ज्वार की रोटी जितनी अवश्य होनी चाहिए।

बेलन हलके हाथ से चलाना। जब लोई साँचे के आकार की हो जाए तो इसे उठाकर साँचे पर रख दो और हाथ से धीरे-धीरे दबाओ, ताकि उसमें साँचे का आकार अच्छे से आ जाए। जब यह थोड़ा कड़क हो जाए तो साँचे को उलटा करके हलके हाथ से थोड़ा-सा ठोको और साँचे को उठा लो। तुम्हारी मूर्ति तैयार है। इसे पकाया तो नहीं जा सकता, पर हाँ, टूटने पर गोंद या फ़ेविकोल से जोड़ ज़रूर सकते हैं और रंग तो कर ही सकते हैं।

❑ ***जया विवेक***

18.साँस-साँस में बाँस

बाँस का यह झुरमुट मुझे अमीर बना देता है। इससे मैं अपना घर बना सकता हूँ, बाँस के बरतन और औज़ार इस्तेमाल करता हूँ, सूखे बाँस को मैं ईंधन की तरह इस्तेमाल करता हूँ, बाँस का कोयला जलाता हूँ, बाँस का अचार खाता हूँ, बाँस के पालने में मेरा बचपन गुज़रा, पत्नी भी तो मैंने बाँस की टोकरी के ज़रिए पाई और फिर अंत में बाँस पर ही लिटाकर मुझे मरघट ले जाया जाएगा।

एक जादूगर थे चंगकीचंगलनबा। अपने जीवन में उन्होंने कई बड़े-बड़े करतब दिखलाए। जब मरने को हुए तो लोगों से बोले, "मुझे दफ़नाए जाने के छठे दिन मेरी कब्र खोदकर देखोगे तो कुछ नया-सा पाओगे।"

कहा जाता है कि मौत के छठे दिन उनकी कब्र खोदी गई और उसमें से निकले बाँस की टोकरियों के कई सारे डिज़ाइन। लोगों ने उन्हें देखा, पहले उनकी नकल की और फिर नए डिज़ाइन भी बनाए।

बाँस भारत के विभिन्न हिस्सों में बहुतायत में होता है। भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों में बाँस बहुत उगता है। इसलिए वहाँ बाँस की चीज़ें बनाने का चलन भी खूब है। सभी समुदायों के भरण-पोषण में इसका बहुत हाथ है। यहाँ हम खासतौर पर देश के उत्तरी-पूर्वी राज्य नागालैंड का ज़िक्र करेंगे। अन्यों की तरह हरेक नागा (नागालैंड में रहने वाला) भी बाँस की चीज़ें बनाने में उस्ताद होता है।

कहा जाता है कि इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। ज़रूरत के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं। कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकट्ठा करता था। शायद भोजन इकट्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो!

बाँस की बुनाई का सफ़र चाहे जैसे शुरू हुआ हो, चंगकीचंगलनबा की कब्र या बया का घोंसला! लेकिन जहाँ खूब बाँस होते हैं वहाँ के लोग इनकी चीज़ें बनाने में माहिर भी खूब होते हैं। नहीं भाई, बाँस से वे केवल टोकरियाँ ही नहीं बनाते। बाँस की खपच्चियों से ढेर चीज़ें बनाई जाती हैं, जैसे, तरह-तरह की चटाइयाँ, टोपियाँ, टोकरियाँ, बरतन,

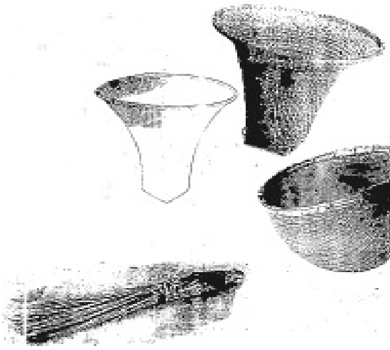

बैलगाड़ियाँ, फ़र्नीचर, सजावटी सामान, जाल, मकान, पुल और भी न जाने क्या-क्या!

असम में ऐसे ही एक जाल, जकाई से मछली पकड़ते हैं। छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए इसे पानी की सतह पर रखा जाता है या फिर धीरे-धीरे चलते हुए खींचा जाता है। बाँस की खपच्चियों को इस तरह बाँधा जाता है कि वे एक शंकु का आकार ले लें। इस शंकु का ऊपरी सिरा अंडाकार होता है। निचले नुकीले सिरे पर खपच्चियाँ एक-दूसरे में गुँथी हुई होती हैं। खपच्चियों से तरह-तरह की टोपियाँ भी बनाई जाती हैं। असम के चाय बागानों के चित्रों में तुम्हें लोग ऐसी टोपियाँ पहने दिख जाएँगे और हाँ उनकी पीठ पर टँगी बाँस की बड़ी-सी टोकरी देखना न भूलना।

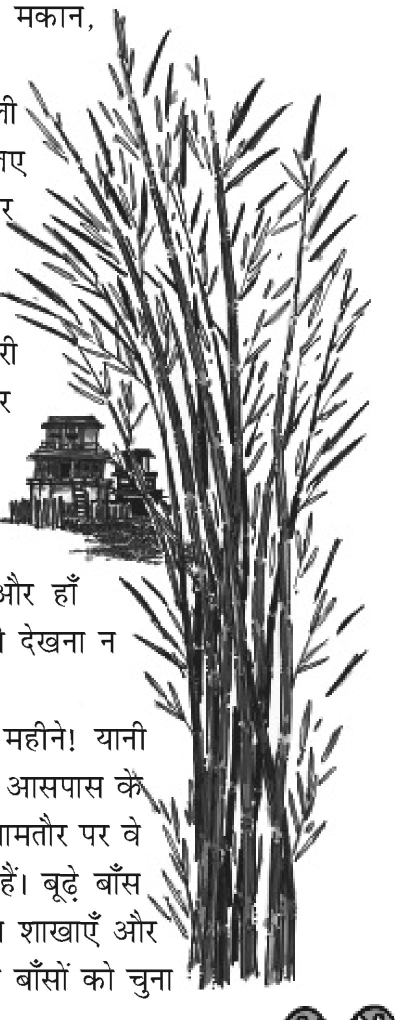

जुलाई से अक्टूबर, घमासान बारिश के महीने! यानी लोगों के पास बहुत सारा खाली वक्त या कहो आसपास के जंगलों से बाँस इकट्ठा करने का सही वक्त। आमतौर पर वे एक से तीन साल की उम्र वाले बाँस काटते हैं। बूढ़े बाँस सख्त होते हैं और टूट भी तो जाते हैं। बाँस से शाखाएँ और पत्तियाँ अलग कर दी जाती हैं। इसके बाद ऐसे बाँसों को चुना

जाता है जिसमें गठानें दूर-दूर होती हैं। दाओ यानी चौड़े, चाँद जैसी फाल वाले चाकू से इन्हें छीलकर खपच्चियाँ तैयार की जाती हैं। खपच्चियों की लंबाई पहले से ही तय कर ली जाती है। मसलन, आसन जैसी छोटी चीज़ें बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है। लेकिन टोकरी बनाने के लिए हो सकता है कि दो या तीन या चार गठानों वाली लंबी खपच्चियाँ काटी जाएँ। यानी कहाँ से काटा जाएगा यह टोकरी की लंबाई पर निर्भर करता है।

आमतौर पर खपच्चियों की चौड़ाई एक इंच से ज़्यादा नहीं होती है। चौड़ी खपच्चियाँ किसी काम की नहीं होतीं। इन्हें चीरकर पतली खपच्चियाँ बनाई जाती हैं। पतली खपच्चियाँ लचीली होती हैं। खपच्चियाँ चीरना उस्तादी का काम है। हाथों की कलाकारी के बिना खपच्चियों की मोटाई बराबर बनाए रखना आसान नहीं। इस हुनर को पाने में काफ़ी समय लगता है।

टोकरी बनाने से पहले खपच्चियों को चिकना बनाना बहुत ज़रूरी है। यहाँ फिर दाओ काम आता है। खपच्ची बाएँ हाथ में होती है और दाओ दाएँ हाथ में। दाओ का धारदार सिरा खपच्ची को दबाए रहता है जबकि तर्जनी दाओ के एकदम नीचे होती है। इस स्थिति में बाएँ हाथ से खपच्ची को बाहर की ओर खींचा जाता है। इस दौरान दायाँ अँगूठा दाओ को अंदर की ओर दबाता है और दाओ खपच्ची पर दबाव

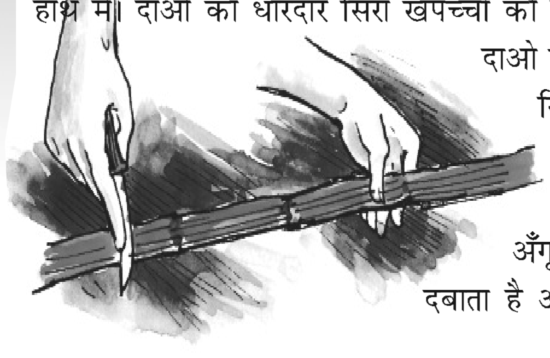

बनाते हुए घिसाई करता है। जब तक खपच्ची एकदम चिकनी नहीं हो जाती, यह प्रक्रिया दोहराई जाती है। इसके बाद होती है खपच्चियों की रंगाई। इसके लिए ज़्यादातर गुड़हल, इमली की पत्तियों आदि का उपयोग किया जाता है। काले रंग के लिए उन्हें आम की छाल में लपेटकर कुछ दिनों के लिए मिट्टी में दबाकर रखा जाता है।

बाँस की बुनाई वैसे ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को चित्र में दिखाए तरीके से आड़ा-तिरछा रखा जाता है। फिर बाने को बारी-बारी से ताने के ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे चेक का डिज़ाइन बनता है। पलंग की निवाड़ की बुनाई की तरह।

टुइल बुनना हो तो हरेक बाना दो या तीन तानों के ऊपर और नीचे से जाता है। इससे कई सारे डिज़ाइन बनाए जा सकते हैं।

टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूँथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है और हमारी टोकरी तैयार! चाहो तो बेचो या घर पर ही काम में ले लो।

❑ *एलेक्स एम. जॉर्ज*

(अनुवाद : शशि सबलोक)

मत बाँटो इंसान को

मंदिर–मस्जिद–गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

अभी राह तो शुरू हुई है–
मंज़िल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी–
हर दीपक मजबूर है।।

मिला न सूरज का संदेसा–
हर घाटी–मैदान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को ।।

अब भी हरी भरी धरती है–
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूना–
जलता रेगिस्तान है।।

अभी प्यार का जल देना है–
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

साथ उठें सब तो पहरा हो–
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगन का हक हो–
खिलती हुई बहार पर।।

रौंद न पाएगा फिर कोई–
मौसम की मुसकान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।
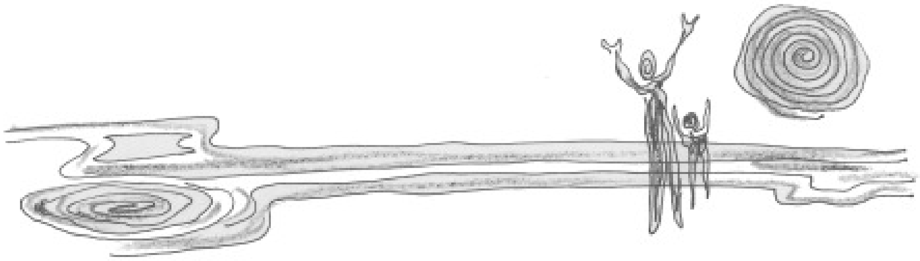
❑ *विनय महाजन*